कंचनपुर की सोना

अनुक्रमणिका

क्रं.स	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	पूर्वाभास	3
2.	पात्र परिचय	3–4
3.	सम्पूर्ण उपन्यास	5–50

पूर्वाभास

नारी आखिर में नारी ही है, चाहे वह पेशे से सद्‌गृहिणी, नर्तकी या तवायफ हो। उसके आँचल में पलता वासना का भयंकर तूफान चाहे कितना ही कठोर और क्रूर हो, कभी न कभी द्रवीभूत होकर, मोम की भाँति पिघलकर मुलायम हो जाता है। तब मानवीय संवेदनाएँ उसके अन्तश में गंगा यमुना की लहरों की भाँति हिलोरे लेने लगती हैं।

'सोना' का सतीत्व भले ही चकनाचूर हो गया हो, किन्तु उसका नारित्व बरकरार है। पतिता कही जानेवाली उस नारी की मानवीय संवेदनाओं ने उसके संपूर्ण दोषों का प्रक्षालन कर उसे खरा कुन्दन बना दिया। वह लौटा देती है पंडित बंशीधर की कीमती हुमेल तथा पुनः बसा देती है उनका उजड़ा हुआ बसेरा।

पात्र परिचय

1. सोना

कंचनपुर निवासिनी बसन्ती बाई तवायफ की पुत्री

2. पंडित बंशीधर

पंडित जगमोहन के इकलौते पुत्र–नब्बे बीघा जमीन के जमींदार, ग्राम कुन्दनपुर

3. मालती

बंशीधर की पत्नी

4. प्रमोद

बंशीधर का इकलौता पुत्र

5. रघुनाथ

मालती के पिता रतनपुर निवासी

6. रमाकान्त

मालती के भाई रतनपुर निवासी

7. डॉ. देवेन्द्रनाथ शुक्ला

नमिता और परेश के पिता तथा प्रमोद के ससुर

8. महिमा

नमिता की माँ

उपन्यास प्रारम्भ

कुन्दनपुर एक आदर्श गाँव है। संगमनगर की सीमा पर बसा यह गाँव अपनी निराली छटा के लिए विख्यात है। गाँव के चारों ओर आम, जामुन, बेल, गूलर आदि की हरियाली का क्या कहना। इस गाँव के निवासी खुशहाल हैं। कुन्दनपुर के किसानों को उन्नत बीज ग्राम स्थित ब्लाक द्वारा समय–समय पर उपलब्ध कराये जाते हैं। गाँव के किसान भी भरपूर मेहनत करते हैं तथा उन्नत ढंग से कृषिकरण में सर्वदा आगे रहते हैं।

बीस हजार की जनसंख्या वाले इस गाँव में भूले भटके ही कभी कभार पुलिस आती है। आपसी झगड़े और विवाद गाँव में ही सलटा लिए जाते हैं। इस गाँव में ब्राह्मण वणिक, कुम्भार, नाई, धोबी करीब–करीब सभी जातियों का समुदाय रहता है। यहाँ लगभग तीस घर पँवार राजपूतों के और करीब बीस पचीस घर मुसलमान मनिहारों के भी हैं। राजपूतों के घर उत्तर दिशा में हैं। पुराने जमीदारों के परिवार हैं जो आज भी सर्व साधन संपन्न है। मनिहारों के परिवार अपना पुराना पुस्तैनी धंधा करते हैं। कुछ लोग अरब देशों में जाकर अच्छी कमाई कर रहे हैं।

यहाँ गजब की एकता है। सभी वर्ग के लोग परस्पर प्रेमपूर्वक रहकर अपनी–अपनी आजीविका कमाते हैं। गाँव में हरिजन वर्ग पूर्ण प्रतिष्ठापूर्वक भाईचारे के साथ रहते हैं। सप्ताह में सभी वर्गों के प्रतिनिधियों की सभा होती है। विकास के कार्यों की विवेचना और योजनाएँ बनाई जाती हैं। गाँव में बालक बालिकाओं के लिए अनेकों पाठशालाएँ है। माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उन्नत शिक्षा की समुचित व्यवस्था है। तीन–चार सरकारी और गैर सरकारी महाविद्यालय भी हैं। यहाँ के पशु चिकित्सालय का योगदान

सराहनीय है। पुशपालकों को उत्तम नस्ल के पशु और उचित परामर्श दिये जाते हैं। यही कारण है कि यहाँ दूध–दही की नदियाँ बहती हैं। पूर्ण रूप से हरितक्रांति और श्वेतक्रांति से ग्रामीण जुड़े हुए हैं।

ग्राम स्थित आयुर्वेद चिकित्सालय और आधुनिक सरकारी हास्पिटल मरीजों की सेवा में तत्पर रहते हैं। अन्य पासवर्ती गाँवो के मरीज दवा कराने इन चिकित्सालयों में आया करते हैं। ग्रामीणों के स्वास्थ्य और चिकित्सा पर समुचित ध्यान दिया जाता है।

सबसे बड़ी वात यहाँ की एकता की है। मंदिर, मस्जिद और धर्मशालाएँ सबके लिए खुली हैं। कभी मंदिरों–मस्जिदों में अतिक्रमण का कोई विवाद सुनने में नहीं आया। हिन्दुओं की दीवाली और मुसलमानों की ईद सभी मिल कर मनाते हैं। रोजा, नमाज और व्रत, उपवास में सभी एक दूसरे का साथ देते हैं।

शादी विवाह और निकाहों में सभी वर्ग के लोग सम्मिलित होकर यथायोग्य एक दूसरे का सहयोग करते हैं। मुसलमानो के घर यदि कोई मरता है तो हिन्दू वर्ग भी मैयियत के साथ कर्बला जाते हैं। यदि हिन्दुओं में किसी की मृत्यु होती है तो हिन्दू मसलमान सभी मिलकर गंगातट पर जाकर अंत्येष्ठि में सम्मिलित होते हैं। क्या है कोई ऐसा आदर्श और संगठित गाँव ? कहते है कि– एक बार काशिम खाँ मनिहार का लड़का पेड़ से गिर गया था। हालत गंभीर हो गयी। गाँव के अस्पताल ने बनारस (बी.एच.यू.) के लिए रेफर कर दिया। मिनटों में व्यवस्था हो गयी। गाँव के चार पाँच नवयुवकों ने गाड़ी मंगवा कर तुरन्त बी.एच.यू. में दाखिला करा दिया और देखभाल की। महीने भर में ठीक होकर वह बालक हँसता खेलता घर चला आया।

ऊँची शिक्षा के लिए 'रामू' हरिजन के पास पैसा नहीं था। शिक्षा अवरूद्ध होने के कगार पर थी। गाँव की पंचायत में सवाल उठाया गया। सभी लोंगों ने सहयोग किया और चन्दा करके उसे बाहर शहर में पढ़ने भेज दिया गया। वही बालक आज डॉक्टर है और सरकारी अस्पताल में एक ख्यातनाम पद पर नियुक्त है।

यही विशेषता इस मध्यम श्रेणी गाँव की है। हरे भरे लहलहाते खेतों में पपीते और अनेक प्रकार की हरी भरी सब्जियों के बगीचों की शोभा मन मोह लेती है। मानो सर्वदा यहाँ बसन्त ऋतु छायी रहती है। जो काई रिश्तेदार व राही यहाँ आता है, मुग्ध हो जाता है। वापस जाने को उसका मन नहीं करता।

सावन की तीज, फाल्गुन की होली यहाँ की प्रसिद्ध है। फाग, चौताल और सावन की कजली गीत का ढंग निराला ही नहीं, अपने आप में एक उदाहरण है। सभी समुदाय गाजे बाजे के साथ जुलूस निकालते हैं। यहाँ जंगली पशु–पक्षियों की हत्या निषेध है। यदि इसमें लिप्त कोई पाया जाता है तो उसे तुरन्त भारी रकम देकर जुर्माना अदा करना पड़ता है। जब सभी खुशहाल हैं तो चोरी आदि का नामो निशान नहीं है। कभी कभार कोई घटना घटती भी है, तो गाँव की चौपाल पर सभी मिलकर हल कर लेते हैं। यह कहावत यहाँ के लिए चरितार्थ होती है कि "दैविक, दैहिक भौतिक ताता। रामराज्य में काहुँ न व्यापा।"

नागपंचमी के अवसर पर एक बार गाँव के नदी तट पर बालक, वृद्ध, नवयुवक और सुन्दरियाँ नये वस्त्रों में स्नान के लिए एकत्र हुए, जिन्हें देखकर लगता था कि देवता और देव कन्यायों से सुशोभित मानो स्वर्ग ही पृथ्वी पर उतर आया हो।

गाँव में दिन प्रतिदिन नये नये मनोरंजन के कार्य चलते ही रहते हैं। चनयनी, लोरिकायन, लोरिक गीत तथा फाग, चौताल, कजरी आदि कार्यक्रम कहीं न कहीं गाँव मे

चलते ही रहते हैं। लोक गीत और लोक साहित्य हमारे देश की प्राचीन विरासत है। इसी से समाज की स्वस्थ परम्पराएँ कायम रहती हैं। समाज में आपसी प्रेम, सद्भाव और भाईचारे को इन्हीं से बल मिलता है। इस गाँव में भिन्न–भिन्न लोक गीतों के श्रोताओं और गायकों का बाहुल्य है। श्रावण मास में आल्हा की चहल पहल रहती है। गाँव के लोग भोजन पानी की व्यवस्था करते हैं तथा जाते समय गायक मण्डली अच्छा पैसा कमाकर ले जाती है।

कई वर्षों से मथुरा और दरभंगा की मण्डली राशलीला करती है राशलीला मंडली महीने भर तक तरह–तरह की लीलाएँ प्रस्तुत करती है और भरपूर पैसा कमाकर ले जाती हैं। रामलीला भी दशहरा के अवसर पर स्थानीय तथा बाहर की मंडलियों द्वारा खेली जाती है। पूरी कुन्दनपुर नगरी राममय हो जाती है। गाँव के बस अड्डों पर अपार जन समुदाय अपनी अपनी बसों के इन्तजार में वार्तालाप करते मेले जैसा दृश्य उत्पन्न करते हैं। गाँव के बड़े, बूढ़े और बालकों के लिए यह बहुत रूचिकर स्थान है। गाँव और गलियों के सभी समाचार इस स्थान पर सुने जा सकते हैं। रामू खाती और हरि ओम नाई प्रायः दिन भर यहीं वार्तालाप करते मिलते हैं। प्रातः आठ बजे आना और देर रात को घर लौटना इनकी जीवन चर्या बन गई है।

इसी गाँव में पंडित जगमोहन मिश्रा का खाता पीता परिवार रहता है। यह परिवार इस गाँव की नाक है। गाँव के सभी लोग पंडित जगमोहन से शादी ब्याह के शुभ अवसरों पर निश्चित रूप से परामर्श लेते हैं। मरना जीना या किसी भी शुभ अशुभ समयों में पंडितजी की राय के बिना काम नहीं चलता। पंडितजी की गाँव में प्रतिष्ठा है और सभी लोग उनकी बाँते तथा सुझावों के कायल हैं। गरीब अमीर सभी के शुभ अशुभ आयोजनों में पंडितजी की उपस्थिति अनिवार्य है। कहते हैं "जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि, और जहाँ न पहुँचे

कवि, वहाँ पहुँचे अनुभवी। पंडितजी बुढ़ापे के अनुभवों से परिपूर्ण हैं। अनुभवों और कुशलता पूर्वक कार्य संचालन के तौर तरीकों ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया। जब आदमी के पास आमद रहती है तो सभी लोग उसकी खुशामद करते हैं।

पंडितजी की गाँव में लोकप्रियता और पूछ का दूसरा कारण उनकी सम्पन्नता भी है। उनके पास नब्बे बीघा उपजाऊ जमीन भी है। उनका इकलौता बेटा बंशीधर मैट्रिक पास करने के बाद खेती, गृहस्थी संभालने लगा है। समय बड़ा बलवान होता है। बुढ़ापे के कारण जगमोहन पंडितजी ने इधर उधर आना जाना बहुत कम कर दिया है। उन्हीं की तरह उनका पुत्र बंशीधर गाँव के सभी आयोजनों में कुशलता पूर्वक अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है तथा मनसा, वाचा कर्मणा सहयोग करता है। कहते हैं कि "यथा पिता तथा पुत्र"। अब पंडितजी का न होना गाँव वालों को नहीं खटकता है। बंशीधर के कुशल सुझाव और कार्य प्रणाली ने पंडितजी को भुला दिया। बाप के रहते यदि बेटा सारा दायित्त्व संभाल ले तो जीवन यात्रा सुखमय हो जाती है। पंडितजी की पत्नी बंशीधर की माताजी भी अब बुढ़ापे के कारण कम ही चल फिर पाती है।

घर में एक नववधू की आवश्यकता सभी को महसूस होने लगी है। "आवश्यकता अविष्कार की जननी है।" बुढ़ापे में पके आम की तरह कोई ठिकाना नहीं कब मौत आ जाय। बंशीधर की माताजी अब मुश्किल से खाना पका पाती है। भरे पूरे संपन्न परिवार में मेहमानों और रिश्तेदारों का आना जाना बराबर लगा रहता है। उन्हें चाय पानी समय पर देना भी घर गृहस्थी का फर्ज बनता है। पंडित जगमोहनजी अब नब्बे के निकट पहुँच रहे हैं। शरीर और सीने के दर्द के कारण धीरे–धीरे खाट पकड़ ली। मौत सभी को आती है। पंडित जगमोहनजी अचानक यमराज के घर के मेहमान बन गये। गाँव के सभी लोगों का विशाल

जन समूह उनकी अंत्येष्ठि में गाजे बाजे के साथ शवयात्रा में सम्मिलित हूआ। खूब ठाट बाट से उनकी अन्त्येष्ठि और क्रिया कर्म सम्बन्धी सभी रश्में पूरी की गई।

बंशीधर अपने पिताजी के संपूर्ण दायित्त्वों को अच्छी तरह संभालने लगा। उन्हीं की भाँति बंशीधर इतना लोकप्रिय हो गया कि पंडितजी को सभी लोग भूल गये। इसके दो वर्ष पश्चात् बंशीधर की ममतामयी माताजी का भी स्वर्गवास हो गया। घर में रोटी बनाने की जिम्मेदारी बंशीधर के मामा की लड़की संगीता ने ली और पुनः गृहस्थी एक ढर्रे पर चल पड़ी। रिश्ते दौलत के पीछे भागते हैं। जगह–जगह से चारों ओर से बंशीधर के लिए रिश्ते आने लगे। विवाह और निकाह सोच समझ कर किया जाता है। यह कोई गुड़िया का खेल नही है। बंशीधर के मामा रघुनाथजी स्वयं अच्छे विवाह की तलाश में जुट गये। रिश्ते तो बहुत आ रहे हैं, किन्तु इस परिवार को एक ऐसी कुशल गृहणी की आवश्यकता है जो आते ही घर संभाल ले। बस क्या था, सोचने और ढूढ़ने से भगवान भी मिल जाते हैं। समीप के गाँव रतनपुर में एक मैट्रिक तक पढ़ी लिखी सर्वगुण संपन्न शालीन कन्या मिल गयी। बंशीधर के मामा ने चला कर स्वयं याचना की और वे सब भी सहमत हो गये।

सभी प्रकार से वह परिवार भी संपन्न और प्रतिष्ठित था। लड़की के पिता रमाकान्त उपाध्याय की भी गाँव और पासवर्ती क्षेत्र में अच्छी धाक थी। उनके दोनों पुत्रों से कनिष्ठ 'मालती' भी कन्या रत्न थी। शीघ्र ही दोनों की कुंडलियाँ मिलाई गयी और बाईस गुण बैठ गये। बस "चट मंगनी पट ब्याह"। खूब धूमधाम से दोनों परिवारों में मंगलाचार होने लगे और तैयारियाँ होने लगी। शुभ मुहूर्त में बंशीधर और 'मालती' का विधिवत पाणिग्रहण संस्कार कर दिया गया। मालती और बंशीधर की शादी में घराती और बराती दोनो संतुष्ठ थे। लोग इस विवाह को भगवान शिव और पार्वती के विवाह की उपमा देने लगे।

शालीनता और सर्वगुण संपन्न मालती घर की बहू बनकर आयी कि घर की काया ही पलट गयी। मालती गृह लक्ष्मी बन कर आयी। उसके आते ही घर की रौनक, प्रगति और वैभव में दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति होने लगी। बंशीधर की प्रतिष्ठा मान मर्यादा में भी द्रुत गति से विकास होने लगा। बंशीधर भी माता–पिता के स्वर्ग सिधारने के संपूर्ण दुःखों को भूल गया।

मालती के रूप यौवन के उल्लास में स्वर्गीय सुखानुभूति होने लगी। संपन्न गृह स्वामिनी मालती ने गाय की इस प्रकार सेवा की कि गाय ने भी दूध बढ़ा दिया। सात बीघा बगीचे में आम, अनार, जामुन, कटहल और बेल के वृक्षों की सिंचाई के लिए कुआ खुदवाया गया। समय का पहिया निरन्तर चलता रहता है। प्रकृति प्रतिक्षण परिवर्तित होती रहती है। नित नव्य रूप धारण करती है। कुछ ही दिनों के पश्चात् 'मालती' ने गर्भ धारण किया। नौ महीने पश्चात् एक ओजस्वी सन्तान का आगमन हुआ।

भारतीय समाज की धारणा है कि जब तक घर में बालक का आगमन न हो तब तक परिवार सूनसान जंगल की भाँति प्रतीत होता है। वेद विधि से जात कर्म के सभी विधान प्रसन्नता पूर्वक पूर्ण किये गये। पंडितों के परामर्श से पुत्र का नाम 'प्रमोद' रखा गया। प्रमोद धीरे–धीरे माँ की गोद से उतर कर रेंगने लगा तथा अपनी अद्‌भुत मुस्कान बिखेरने लगा। प्रमोद की किलकारियाँ बंशीधर के प्रांगण को चिड़िया की चहचहाट की भाँति गुंजायमान करने लगी। वह कुछ ही वर्षों के बाद बालकों के साथ गाँव की पाठशाला में जाने लगा। बंशीधर और मालती को इससे बड़ा और कौनसा सुख मिल सकता था? बंशीधर प्रति पल मालती और प्रमोद को देख कर फूला नहीं समाता था। यही वह सुख है जिसे सबसे बड़ा सुख कहा गया है।

इधर सरयू नदी में अति वृष्टि के कारण बाढ़ आ गयी। इसे बाढ़ कहें या प्रलयंकारी विभीषिका। अबकी बार तो कई सालों का रिकार्ड ही टूट गया। जयशंकर प्रसाद द्वारा वर्णित महाजलप्लावन की याद आने लगी "समय प्रहर कितने बीते, इसको कौन बता सकता है? इसके सूचक उपकरणों की थाह न कोई पा सकता है।" सरयू नदी ने चीन के शोक ह्वागहो का विकराल रूप धारण कर लिया। आसपास के गाँव भीषण बाढ़ से पीड़ित हो गये। सरकारी और जन सहयोग की सहायता भी कम पड़ने लगी। सरयूतट के कई गाँवो में बाढ़ का पानी भर गया। लोग गाँव छोड़ कर सुरक्षित स्थानों पर पलायन करने लगे। बाढ़ से प्रताड़ित परिवारों में से एक परिवार ने कुन्दनपुर के निकट कंचनपुर में आकर शरण ली। ये लोग नाच गान करने वाले परिवार के थे।

इसी परिवार में बसन्ती बाई भी थी जिसने अपनी पाँच वर्षीय पुत्री सोना के साथ कंचन पुर में शरण ली। जन सहयोग से इन लोगों ने मकान बना लिया तथा सरकारी सहयोग से जीवन यापन करने लगे। कहते हैं कि हुनर और कला अपने आप जाहिर हो जाती है। बसन्ती बाई की कला भी धीरे धीरे चारों और फैलने लगी। दूर दूर तक 'बसन्ती' जैसी नाच–गान की सम्राट कोई थी ही नहीं। उन दिनों बसन्ती का जमाना था। उसकी कला के प्रशंसक बहुत थे। प्रत्येक व्यक्ति की जुबान पर बसन्ती का नाम था। बसन्ती बाई अपने फनकार की धनी थी। नृत्य के साथ साथ उसका स्वर भी कोयल के समान था। "नहीं मोहताज जेवर का जिसे खूबी खुदा ने दी, खुशनुमा चाँद लगता है बिना गहने के" की कहावत उस पर चरितार्थ होती थी। हुनर और अकल वाले के पास पैसे की बौछार होती है।

"चोखा काम, चोखी कमाई" शादी ब्याह व अन्य आयोजनों में जहाँ बसन्तीबाई का कार्यक्रम होता अपार जनसमूह शोण के प्रवाह की भाँति उमड़ पड़ता था। रूपयों की वर्षा

होने लगती थी। फिर क्या था बसन्ती ने अपना मकान भी पुनः नये ढंग से बनवा लिया और ऐश आराम की जिन्दगी जीने लगी। बड़े–बड़े रईसों और तालुकेदारों की मैफिलें बसन्ती बाई के घुँघरूओं की झनकार के बिना फीकी पड़ने लगी। बसन्ती ने बेशुमार धन कमाया।

इन नाच गान करने वालियों की बेशुमार कमाई की उम्र हुआ करती है। उम्र निकल जाने के बाद उनके हाथ से छुए बेर भी कोई नहीं खाता है। समाज के जो सफेदपोश लोग उनकी प्रशंसा करते हैं, वे ही लोग विरोधी हो जाते हैं तथा उन्हें दूध की मक्खी की भाँति निकाल कर फेंक देते हैं। समाज में इन लोगों को कोई स्थान नहीं मिलता। उनके पहले के चहेते ही उन्हें समाज से बहिष्कृत कर देते हैं तथा नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर कर देते हैं। बसन्ती को इन बातों का अच्छा ज्ञान था। पुराने राजे महाराजे भी राजनीति, चालाकी, अदब तथा तौर तरीका इन्हीं लोगों से सीखते थे। बसन्ती सबसे मिलती थी पर पूर्ण विश्वास किसी पर नहीं करती थी। वह इस युवा समाज की नस नस से परिचित थी तथा कान कुतरने वाली चालाकी उसमें कूट कूट कर भरी हुई थी। देहाती कहावत है कि "जैसी ककड़ी वैसा बीज"। बसन्ती की अंक पली 'सोना' भी माँ से चार हाथ आगे निकली। अपनी माँ बसन्ती बाई की संगत अब सोना भी देने लगी। सोना का रूप रंग उसकी माँ से अधिक आकर्षक था। वह इस क्षेत्र के दिलों की धड़कन बन गई। बसन्ती बाई का कार्यक्रम जहाँ जहाँ होता उसके साथ साथ 'सोना' का भी नाम जुड़ने लगा।

पूरे बनारस और इलाहाबाद में भी वैसी रूपसी आदाकारा कोई नहीं थी। कहते हैं कि खिलता हुआ फूल और उभरता हुआ यौवन या जवानी छिपाये से नहीं छिपती। सोना अब कली से पुष्प बनने जा रही थी। जहाँ कहीं बसन्ती का कार्यक्रम चलता मक्खिओं के झुण्ड

की तरह जन सैलाब उमड़ पड़ता। कई दिन पहले से लोगों में चर्चा होने लगती कि बसन्ती बाई के साथ उसकी रूपसी लड़की सोना भी नाचती गाती हे।

बसन्ती के दिन गये अब तो सोना ही सोना है। 'सोना' जब स्टेज पर उतरती तो मानो इन्द्र के दरबार से कोई अप्सरा पृथ्वी पर आ उतरी है। उसके गजब के रूप सौंन्दर्य और अदा को देख कर बड़े बड़े लोग दाँतो तले उँगली दबा लेते। क्या गजब ढाने वाला रूप, क्या गजब का स्वर और ताल से ताल मिलाने वाले घुँघरूओं की झनकार, मानो विश्व विजय के लिए कामदेव ने दुन्दुभी बजा दी है। अनायास ही लोगों को किसी शायर की लिखी ये पंक्तियाँ याद आने लगती "इन हसीनों को खुदा ने बनाया अपने हाथ से, और हम ऐसे कमबख्त निकले कि जो ठेके पर बनवाए गये"।

बसन्ती अब धीरे–धीरे उम्र के अन्तिम पड़ाव की ओर बढ़ती जा रही थी। वह कम और सोना अधिक कार्यक्रमों में भाग लेती। बसन्ती हमेशा सोना के साथ साथ छाया की भाँति रहती और अंग रक्षक की भूमिका अदा करती रहती। दुनियाँ बड़ी निराली है। कई बार सोना के ऊपर कार्यक्रमों में प्रस्तुति के समय हमले भी हुए किन्तु माँ की भाँति इतनी चतुर हो गयी थी कि बड़े–बड़े भौंरों के कान कुतरने लगी। युवा पीढ़ी को भाँपने का मनोविज्ञान उसे अच्छी तरह से समझ में आ गया है। एक बार उसके घर में चोरी हुई। कुछ उपयोग की वस्तुओं के अलावा चोरों के हाथ कुछ भी नहीं लगा।

'सोना' के सारे कीमती आभूषण और रत्न जवाहरात कंचनपुर के बैंक के लॉकरों (मंजूषा) की शोभा बढ़ा रहे थे। चोर हाथ मलते रह गये। 'सोना' नाच गान करती लेकिन पूर्ण अदब और इज्जत के साथ। बसन्ती ने जितना नाम नहीं कमाया उससे अधिक सोना ने कम उम्र में ही कमा के दिखा दिया। चारों ओर **"कंचनपुर की सोना"** के नाम से विख्यात हो

गयी। कलाकार अपनी कला के लिए समर्पित होता है। कला ही उसका जीवन होता है। कला के बिना उसे घुटन महसूस होती है और कला के बिना जी भी नहीं सकता। एक बार किसी हीरे–जवाहरात के व्यापारी ने मुग्ध होकर सोना को अपार धन देने के लिए कहा "मैं तुम्हारे नाम इतनी सम्पत्ति लिख दूँगा कि तुम माँ बेटी जीवन भर नौकर चाकर रख कर सेवा कराना तथा बैठे–बैठे खाना"।

सोना ने पहले हाँ कर दी किन्तु बाद में कहा कि "बाबूजी मेरी कला और फनकार का क्या होगा? हम कलाकार हैं। कला के बिना हमारा जीवन अधूरा है। हम जी नहीं पायेंगे। नदी के प्रवाह को रोका नहीं जा सकता। यदि नदी का प्रवाह रूक गया तो अपनी निर्मलता, अपनी स्वच्छता को खो देगा। उसमें सड़ाँध पैदा हो जाएगी और सारा जल प्रदूषित हो जाएगा। हमें प्रकाश चाहिए। प्रकाश के बिना अन्धकार के गर्त में घुट घुट कर हम मर जाएँगे।" कला के लिए स्वच्छ पवन का प्रवाह और उर्वर भूमि तथा प्रबुद्ध प्रशंसकों की आवश्यकता होती है, तभी कला का पौधा अच्छी तरह से पनप कर पल्लवित, पुष्पित हो सकता है। बनिया को बाँध कर बाजार नहीं लाया जा सकता। हाँ मैं तुम्हारे साथ इस शर्त पर रह सकती हूँ कि मुझे नाचने गाने की पूर्ण स्वतंत्रता हो"। कहा गया है कि "पराधीन सपनेउ सुख नाही"। यह सुन कर वह प्रतिष्ठित धनी व्यापारी निरूत्तर हो गया।

ऐसे अनेकों लोगों ने मनुहार की किन्तु सोना स्वतंत्र जीवन जीना पसन्द करती तथा उनके आग्रह को ठुकरा देती। सोना की सोहरत दिनदूनी रात चौगुनी इसी तरह बढ़ती रही। अब लोग बाग उसकी माँ को भूलते जा रहे थे। कही भी उसका कोई कार्यक्रम होता तो लोग कहते कि "अरे भाई वहाँ जरूर चलेंगे, वहाँ कंचनपुर की सोना का कार्यक्रम है।" जहाँ सोना का कार्यक्रम होने को होता लोग सजग हो जाते और पहले से ही पुलिस को सूचना दे

दी जाती कि कहीं मारधाड़ या बलवा न हो जाय। क्योंकि अपार जनसमूह उमड़ पड़ता था। इतने बड़े जनसमूह में इस प्रकार की घटनाएँ स्वाभाविक ही है। रामपुर गाँव में सोना का कार्यक्रम चल रहा था कि आपस में कहासुनी हुई और दो समूहों में झगड़ा हो गया। इस झगड़े ने इतना उग्र रूप धारण कर लिया कि गोली चलने की नौबत आ गई। किसी प्रकार पुलिस वालों और स्वयं 'सोना' ने समझा बुझा कर मामले को शान्त किया।

ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है। मालती और पंडित बंशीधर की गृहस्थी खूब अच्छी से चल रही थी। प्रतिदिन शाम सवेरे पंडित बंशीधर अपनी मित्रमंडली से घिरे रहता। गोपाल और दीनानाथ इसके बचपन के साथी हैं। आपस में हँसी मजाक का आदान प्रदान चलता ही रहता है। 'मालती' चाय पानी संगीता के माध्यम से बैठक में भेजती रहती और मित्रमंडली घंटो तक वार्तालाप में माशगूल रहती।

आज गोपाल और दीनानाथ बहुत शरारती ढंग से हँसते हुए आ रहे थे। रह रह कर अनेक ठहाकों की आवाज दूर से ही सुनाई पड़ती थी। युगल मित्रों ने अपना रूख पंडित बंशीधर की हवेली की ओर कर लिया। पंडितजी अपनी हवेली की बैठक में घरेलू बातें कर रहे थे। आते ही बंशीधर ने चाय पानी पूछा। उन लोगों ने कहा कि आज खुशखबरी सुनाने आये हैं। कल ठाकुर साहब की हवेली में जलसा है। उनके छोटे लड़के 'भूपसिंह' को पुत्र रत्न प्राप्त हुआ है। उसी के उपलक्ष में कंचनपुर की बसन्ती बाई और उसकी मशहूर पुत्री सोना का प्रोग्राम रखा हुआ है। सचमुच कितना आनन्द आएगा? बसन्ती बाई और सोना का तो नाम बिकता है। वे हैं भी बहुत कमाल की तवायफें। हमारे गाँव कुन्दनपुर में शायद ऐसी अदाकाराऐं कभी नहीं आई हैं।

वार्तालाप अपने उत्कर्ष पर था कि उसी समय मालती तीन गिलास पानी लाई। दोनो साथी जलपान ग्रहण कर पुनः वार्ता में लीन हो गये। इसी समय दो और साथी घनश्याम और मोहन भी आ धमके। अब चारो साथियों के वार्तालाप से पूरी बैठक गूँजने लगी। चारों साथियों ने चाय ग्रहण की और पुनः वार्तालाप शुरू हो गया। घनश्याम ने कहा कि बसन्ती कमाल की नर्तकी है और उसकी बेटी सोना तो बिजली है। जब मंच पर आती है तो प्रतीत होता है कि कोई स्वर्ग की अप्सरा राह भटक कर आ गई हो। मोहन ने कहा कि सोना के थिरकते घुँघरूओं की झनकार सुन कर बड़े–बड़े लोगों का धैर्य टूट जाता है। पिछले वर्ष सोना की अदा पर एक तालुकेदार ने अपनी एक हवेली और दस बीघा जमीन उसके नाम लिख दी।

चारों साथी वार्तालाप कर रहे थे कि मालती अन्दर से बाहर की ओर आ गई और बोल उठी "आज आप लोग सभी खाली बैठे हो क्या? क्या पूरे दिन भर बसन्ती बाई और उसकी बेटी सोना की ही चर्चा चलेगी? और कोई बात नहीं है? वास्तव में आप सभी उसी के पीछे लट्टू हुए जा रहे हो। यह मर्द जात ही ऐसी है। तभी तो विश्वमित्र ने मेनका और राजा पुरूरवा ने उर्वशी के चक्कर में पड़कर अपना सर्वस्व ही लुटा दिया। चारों साथी जोर जोर से हँसने लगे। पूरी बैठक हँसी के ठहाकों से गूँज उठी। दूसरे दिन सवेरे ही ठाकुर साहब की हवेली में चहल पहल शुरू हो गई।

मजदूर बस्ती के सभी लोग सफाई और साज सज्जा में व्यस्त दिखाई दे रहे हैं। पंडित बंशीधर और गाँव के बड़े बूढ़ो से ठाकुर साहब का चौपाल भरा है। कोई आ रहा है और कोई जा रहा है। सभी के जुबान पर बसन्ती बाई और सोना की ही बात है। मंच बनाया जा रहा है। सभी प्रकार के दर्शकों के बैठने की व्यवस्था की जा रही है। नौकर

चाकर सभी अपने अपने काम में लगे हुए हैं। पंडित बंशीधर के निर्देशन में मेहमानों के ठहरने की व्यवस्था की जा रही है। शामियाने में ही कनात लगाकर, बसन्ती बाई और सोना तथा साथ में आये वादकों के लिए प्रकोष्ठ बनाए जा रहे हैं। एक ओर पुरूष वर्ग तथा दूसरी ओर महिला वर्ग के लिए बैठने की व्यवस्था की जा रही है। तरह तरह के मिष्ठान और पकवान बनाए जा रहे हैं। इधर पंडितजी के निर्देशन में पूजा पाठ की संपूर्ण प्रक्रिया विधिवत चल रही है।

ठीक चार बजे शाम को बसन्ती बाई सोना के साथ तथा साज बाज के साथ आ गई। साथ में चार पाँच आदमी तबला और हारमोनियम तथा सारंगी बजाने वाले भी हैं। धीरे धीरे ठाकुर साहब के दरवाजे पर भीड़ गहराती जा रही है। गाँव के बच्चे, बूढ़े सभी सोना की एक झलक पाने लिए बेताब हैं। गाँव के लड़के आँखे फाड़ फाड़ कर कनात की ओर देख रहे हैं। कभी कभार बसन्ती और सोना की बातें फुसफुसाहट के रूप में सुनाई पड़ती हैं। सभी बड़े गौर से कान, आँख फाड़ कर देख और सुन रहे हैं। नत्यू कहार और रामदीन को बसन्ती और सोना की तिमारदारी में लगाया गया है। वे जब प्रकोष्ठ के बाहर आते हैं तो कहते हैं "क्या शर्बती आँखे और मोहनी सूरत और अदब दोनों एक दूसरे से बढ़ कर तथा इनके आगे तो आसमान भी छोटा पड़ता है।" कार्यक्रम की तैयारी चल रही है। बसन्ती और सोना शृंगार कर रही हैं।

बालकों का समूह रह–रह कर कनात के छेदों से झांक रहा है। सभी लोग आतुर हैं तथा एक झलक पाने के लिए बेचैन हैं। सोना के शृंगार को लोग बाग निहारने का प्रयास कर रहे हैं। मलिक मोहम्मद की पंक्तियाँ याद आ जाती है कि "बेणी छोड़ि जो झारेबारा सरग पताल होय अधियारा"। मय साज बाज के बसन्ती ओर सोना की मंडली विराजमान है। जैसे

ही सोना मंच पर आई तालियों की गड़गड़ाहट से सारा गाँव गुंजायमान हो गया। मालूम होता है कि घने बादलों की परत चीरकर चन्द्रमा चारों ओर देख रहा है। चन्द्रमा भी मानो सोना के रूप को देखकर ललचा रहा हो।

साज बाज बनजे लगे। दर्शक दीर्घा स्त्री पुरूषों की भीड़ से खचाखच भर गई। इतना अपार जनसमूह किसी आयोजन में उमड़ते नहीं देखा गया था। यदि फेंक दो तो सरसों भी जमीन पर नहीं गिरे। मंच पर आते ही सोना ने अपनी चंचल चित्तवन से सभी लोगों को मोह लिया। सभी लोगों का दिल धक्क करके रह गया। सोना के गीत के बोल भगवान कृष्ण को लक्ष्य लेकर चल रहे थे "छैल छबीली रशीली तेरी अखियाँ"। साज, बाज, लय तथा घुँघरूओं की झनकार सब मिलकर एकी भाव हो रहे थे। सभी लोग स्तंभित हो गये।

वास्तव में कला ईश्वर की देन है। कला अमर है। चारों और सोना ही सोना की चर्चा हो रही है। पंडित बंशीधर भी आँख फाड़ कर देख रहे हैं। मालूम होता था कि वे सोना के रूप लावण्य में खोये जा रहे हैं। भाव विभोर होकर सभी सोना की तारीफ कर रहे हैं। पूरी रात सोनाछायी रात बन गयी। पंडित बंशीधर सोना के इतने चहेते बन गये कि सारा काम काज छोड़कर उसी के इर्द गिर्द चक्कर काट रहे हैं। इन्होंने दूसरे दिन सोना को समस्त मंडली के साथ अपने घर बुलाया और नास्ता पानी तथा भोजन कराया।

सोना की भी नजरें पंडित बंशीधर पर थी। मालूम होता था कि दोनों पहले से ही परिचित हैं। यह रात यद्यपि रंगीन रात थी, किन्तु पंडित बंशीधर के परिवार के लिए विनाशकारी शीत निशा थी। मालती की सुख भरी गृहस्थी में मानो ग्रहण लग गया। कादम्बरी के पुण्डरीक की भाँति महाश्वेता रूपी यक्ष बाला सोना के तीक्ष्ण कामबाणों ने पंडित

बंशीधर के हृदय को छेद दिया। मालती भी पंडित बंशीधर के बदले हाव भाव से परेशान हो गई। दूसरे दिन ही पंडित बंशीधर कंचनपुर के लिए रवाना हो गये। 'सोना' के घर पहुँचने पर उसने बड़े अदब और सम्मान के साथ पंडितजी का स्वागत किया। यद्यपि तवायफें और लक्ष्मी किसी का परिचय नहीं रखती फिर भी पंडितजी का स्वागत अच्छा हुआ।

पंडित बंशीधर ने बसन्ती के सामने प्रणय निवेदन किया। किन्तु बसन्ती ने यह कहकर ठुकरा दिया कि हम तवायफ हैं। जवानी भर हम कमाते हैं और जीवन भर खाते हैं। जवानी बीतते ही लोग हमें दूध की मक्खी की भाँति निकाल कर फेंक देते हैं। हमें समाज में प्रतिष्ठा के स्थान पर बदनामी ही मिलती है। हम किसी से प्रेम और विवाह नहीं करते। दाम हैं तो हम आपके हैं, और नहीं है तो रास्ता नापो। हमारी कला को कोई नहीं देखता। केवल आत्म तुष्टि के लिए हमारे यौवन और रूप का ही लोग सौदा करते हैं। यदि सोना को पाना है तो बीस असर्फियों वाला हुमेल और दो लाख रूपये नगदी पहले पेशगी के रूप में भेंट कीजिए फिर सोना आप की है। यदि नहीं है तो देखना फिर कंचनपुर की ओर रूख नहीं करना।

शाम को पंडितजी अपने घर कुन्दनपर जाकर सोचने लगे। इसी सोच विचार में उदविग्न हो गये। उन्होंने अपनी संपूर्ण जमीन गिरवी रख दी। जमीन गिरवी रखकर बीस असर्फियों वाली हुमेल बनवाकर तथा दो लाख रूपयों की थैली ले जाकर सोना के कदमों पर पटक दी। पंडित बंशीधर ने अपनी सुख चैन की गृहस्थी को सोना के रूप की बलिवेदी पर भेंट चढ़ा दिया। चारों ओर गाँव में तथा रिश्तेनाते में यह बात वन की आग की भाँति फैल गई। सोना का रूप एक खेलती खाती गृहस्थी के अमन चमन को निगल गया। मालती को जैसे ही मालूम हुआ उसे मानो साँप सूँघ गया हो। सन्न हो गई। बेचारी धड़ाम से गिर पड़ी।

प्रमोद स्कूल से आया। उसे पकड़ कर चीखें मारकर रोने लगी। पड़ोसियों ने आकर प्रमोद और मालती को समझाया। उसकी तो सारी दुनिया उजड़ गयी थी। "अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत"। सोना और बसन्ती ने मालती और प्रमोद की सुख भरी सारी दुनिया ही उजाड़ दी। सुखों के दिन बीतेरे भई, दुःखों के दिन आये। प्रेम के साथ जो साथ साथ रहते, वे सब हुए पराये"। चारों ओर बदनामी फैल गई। पंडित बंशीधर अपना घर परिवार छोड़ कर सोना के घर कंचनपुर ही रहने लगा। सोना के साथ साथ कार्यक्रम जहाँ होता वहाँ जाता।

बसन्ती अब वृद्ध होने लगी। किसी भी आयोजन या नाच गान में भाग नहीं लेती। चला फिरा नहीं जाता। सोना अकेले ही नाचने गाने जाया करती। साथ में बंशीधर अंगरक्षक की भाँति जाते रहते हैं। इधर मालती के पीहर वालों को जब मालूम हुआ तो वे आकर मालती और प्रमोद को कुन्दनपुर से रतनपुर अपने घर ले गये। भरी पूरी गृहस्थी के ताला लग गया। मालती और प्रमोद अपने ननिहाल में ही रहने लगे। जो मालती दूसरों को रोटी देती थी, वही अब पीहर की रोटी पर गुजर बसर करने के लिए विवश हो गई। समय एक सा नहीं रहता। कुछ दिनों पश्चात् बसन्ती सोना को अकेली छोड़ कर स्वर्ग सिधार गई। रतनपुर के स्कूल में प्रमोद बारहवी में पढ़ रहा है।

अब उसे सब कुछ पता चल गया है कि उसका असली घर यह नहीं है। वह अपने ननिहाल में एक मेहमान की भाँति है। यही कारण है कि उसकी माँ मालती दिनोदिन काँटे की भाँति सूखती चली जा रही है। प्रमोद एक होनहार छात्र है। उसे मामा और मामी के पुत्रों का कृत्रिम व्यवहार भी अब खटकने लगा है। मालती भी अपने पूर्व के जीवन को याद कर घंटो बैठ कर सोचा करती थी। मालती को विशेष चिन्ता प्रमोद के भविष्य को लेकर थी। वह

सोचती थी कि प्रमोद अब किशोरावस्था को लाँघ जवानी की दहलीज पर कदम रखने वाला है। ममेरे भाइयों से आये दिन छोटी मोटी तकरार बात बात पर हुआ करती है। यदि यह तकरार कभी विवाद बन गई तब क्या होगा? इसी उधेड़बुन में चिन्ता के कारण मालती के बाल अब सफेद होने लगे हैं।

प्रमोद के ननिहाल रतनपुर का बच्चा बच्चा यह जानता है कि प्रमोद का यह अपना घर नहीं है। यह अपने मामा के घर रहता है। इसके पिता ने इसकी समस्त सम्पत्ति गिरवी रखकर सोना की बलिवेदी पर अर्पित कर दी है और घरबार छोड़कर उसी के घर कंचनपुर रहता है।

प्रमोद ने बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है। प्रथम श्रेणी लाने के बावजूद भी मामा के घर वाले उसके उच्च अध्ययन की चिन्ता नहीं कर रहे हैं। ममेरे भाईयों के अच्छे अंक नहीं होने पर भी उनके अध्ययन के प्रति परामर्श लिया जा रहा है। मालती को यह चिन्ता बराबर सताए जा रही है कि कैसे वह अपने भाई से प्रमोद को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए कहे? भाई भाभी की छत्रछाया में वे दोनों पल रहे हैं क्या यह कम है? प्रमोद मामा के घर खेती गृहस्थी में जी तोड़ परिश्रम करता।

उसके मामा के लड़के इलाहाबाद उच्च अध्ययन के लिए किसी महाविद्यालय में दाखिला ले चुके हैं। मामा के ऊपर प्रमोद और अधिक भार नहीं डालना चाहता। उसने स्वयंपाठी छात्र के रूप में उच्च शिक्षा लेने हेतु संकल्प कर लिया है। रात दिन खेतों पर काम करना और मामा की गाय भैसों की देखभाल करना उसकी दिनचर्या बन चुकी है। यद्यपि उसके मामा ने कई बार उच्च अध्ययन के लिए दाखिला कराने के बारे में पूछा पर प्रमोद ने मना कर दिया। पूरे रतनपुर गाँव में किसी के खेतों में वैसी हरी भरी फसलें नहीं

लहलहा रहीं थी जैसी प्रमोद के मामा के खेतों में। गाँव के लोग ईर्ष्या करने लग गये थे कि प्रमोद ने खेती में सभी को नीचा दिखा दिया है। एक दिन घर से भैंस गाय चराने प्रमोद पड़ोसियों के लड़कों के साथ गया था। आपस में तूँ तूँ मैं मैं हुई और झगड़े का भयंकर रूप बन गया। उन लड़कों ने प्रमोद को खरी खोटी बात के अतिरिक्त ताना मारना शुरू कर दिया। "ऐसा होता तो अपने घर रहता, यह मामा का घर है। जब चाहें, उनके बच्चे कान पकड़ कर घर से बाहर कर देंगे। आया है बढ़बढ़ कर बाँते करने वाला। तुम्हारे नालायक बाप ने अपना सर्वस्व गिरवी रखकर तवायफ का घर भर दिया। दूसरे के टुकड़ों पर पलता हुआ तूँ शान बघारने आया है।"

उस दिन प्रमोद अन्य दिनों की भाँति काम से निवृत्त होकर पढ़ने की ओर उदासीन हो गया। मालती के बार बार कहने के बावजूद खाना खाने नहीं उठा। बिस्तर पर जाकर लेट गया। माँ का हृदय बहुत तरल और उदार होता है। घर में भाभी भाई के आग्रह करने के उपरान्त भी मालती ने अन्न ग्रहण नहीं किया। रात के लगभग बारह बजे मालती के सब्र का बाँध टूट ही गया। हाथ में भोजन की थाली तथा दूध भरा गिलास लेकर प्रमोद के बिस्तर के पास गई। प्रमोद को जगाते समय स्वयं फफक कर रो पड़ी। प्रमोद की ग्लानि से उसके कोमल हृदय पर पड़े फफोले फूट फूट अश्रुनलिका के रास्ते बाहर निकलने लगे। मालती खूब रोई, इसके कारण उसकी व्यथा कुछ हल्की पड़ने लगी। मालती के भाई भाभी और लड़के भी आ गये। किसी प्रकार प्रमोद ने सबके आग्रह करने पर एक गिलास दूध लिया।

इधर मालती के भाई भाभी को रात भर नींद नही आयी। ऐसी परिस्थिति में नींद भी हिरन हो जाती हे। वे लोग रातभर यही चर्चा कर रहे थे। घर के बच्चे अब जवान होने को

हैं। सबकी शादियों के लिए आये दिन रिश्ते आ रहे हैं। यदि अपने बच्चों की प्रमोद से पहले शादी कर देता हूँ तो प्रमोद क्या सोचेगा सबसे बड़ी मुसीबत तो यह है कि गाँव वाले बढ़ बढ़ कर बाँते करेंगे कि "अपने बच्चे की शादी कर ली और बहन के बच्चे को बिना शादी के रख दिया"। यह तिरस्कार और उपेक्षा नहीं तो और क्या है?

प्रमोद के बारे में दूर दराज के गावों के लोगों को भी ज्ञात था कि उसका बाप एक तवायफ के चक्कर में खुद का और अपने बेटे का सर्वनाश कर चुका है। भूले भटके यदि कोई रिश्ता आता भी तो पास पड़ोस के लोग चुगली कर देते कि प्रमोद कंगाल है। मामा के घर रहता है। इसके बाप ने तवायफ को रखैल बना रखा है और उसी के पास रहता है।

प्रकृति का खेल बड़ा निराला है। प्रकृति किसी को सुख और शान्ति से रहने नहीं देती। आज प्रमोद बहुत भावुक हो रहा था। सवेरे उठकर खेत पर चला गया। मालती के भाई साहब को भी उसकी गम्भीरता ओर भावुकता का आभास हो रहा था। खेत में पानी देना था, फसल सूख रही थी। उसने देखा कि गन्ने के पौधे मुरझा रहे थे।

यदि दो दिन और पानी नहीं दिया गया तो सारी फसल सूख कर नष्ट हो जाएगी। खेत में सूख कर मिट्टी के डले कठोर हो रहे थे। चारों ओर तितर बितर डलों को देखकर उससे रहा नहीं गया। वह दौड़ कर घर गया और बिना किसी से कुछ कहे तेल का जरिकन लिया और ट्यूबेल के इंजन में डीजल डालकर चालू कर दिया। दोपहर तक खेत पानी से भर उठा। ट्यूबेल बन्द कर घर गया। स्नान कर खाना खाया और सो गया। शाम को पुनः खेत देखने गया। वही खेत अब पूर्ण रूप से हरा भरा दिखाई दे रहा था और हवा के झोंकों से अठखेलियाँ करता हुआ प्रमोद को प्रफुल्लित कर रहा था। पेड़ पौधे भी संदेश देते हैं। हवा के झोंकों से टकरा कर सरसराहट मानो प्रमोद का एहसान जता रही थी।

उसने देखा की बिखरे हुए मिट्टी के डले अब संगठित होकर गन्ने की फसल को पोषण प्रदान कर रहे हैं। जब जड़ डले पानी के योग से संगठित होकर पौधों को पोषण दे सकते हैं तो क्या चेतन मानव श्रम के योग से अपनी बिखरी हुई गृहस्थी नहीं जोड़ सकता। ये संकल्प विकल्प उसे आन्दोलित करने लगे। घर आकर देखा तो तीन चार लोग वहाँ बैठे हुए उसके मामा जी से बातें कर रहे थे। वे शायद उसके मामाजी के बड़े लड़के के बारे में बातें कर रहे थे। वे रिश्ता लेकर आए थे। मामाजी भी जवाब दे रहे थे कि जब तक भान्जे की शादी नहीं कर लूँगा तब तक लड़के का रिश्ता नहीं करूँगा। प्रमोद के लिए वे सब मना कर रहे थे। वे सब कह रहे थे कि "मानता हूँ प्रमोद स्वस्थ, सुन्दर और श्रमशील है। पढ़ने में उसकी रूचि है। पर आप के यहाँ रहते हुए उसका भविष्य क्या है? आगे चल कर पनपने के लिए तथा विकास के लिए पौधे को जमीन चाहिए और अपनी जमीन हो तभी जाकर पौधा पल्लवित पुष्पित होगा। मैं अपनी बेटी की शादी जान बूझकर उस लड़के से कैसे कर सकता हूँ जिसका कोई भविष्य न हो? जिसका बाप एक कुजाति को रखैल बना कर उसके साथ रहा रह हो।"

यह बात एक ही साथ प्रमोद और मालती दोनों को आहत कर गयी। तीखे वाँण की तरह दोनों दिलों को एक ही साथ छेद गयी। मालती के भाभी और भाई साहब को भी बड़ा दुःख हुआ। मेहमानों को विदा करने के बाद प्रमोद के मामाजी बहुत दुःखी हुए और गम्भीर चिन्तन में मग्न हो गये।

दूसरे दिन उन्होंने साईकिल उठायी और कुन्दनपुर की राह पकड़ी। कुन्दनपुर के अड़ोसी पड़ोसी ने प्रमोद के मामाजी को पानी, चाय, नास्ता और भोजन कराया तथा प्रमोद के बारे मे पूछने लगे। "प्रमोद अब तो जवान हो गया होगा। क्या कर रहा है?" प्रमोद के

मामाजी की नजर यकायक उस उजड़े हुए घर पर पड़ी जहाँ पहले बैठकें लगती थी। चहल पहल वाला घर अब कबूतरों का पनाहगार बन कर रह गया है। बार बार मानो चीख कर पुकार रहा था तथा अपने पुनरोद्धार की याचना कर रहा था। आँसु बहा कर कह रहा था कि– "उद्धार करो"। बंशीधर ने अपने अमन चमन के आशियाने को स्वयं अपने ही हाथों से उजाड़ दिया। यह करूण कथा प्रमोद के मामाजी के हृदय की व्यथा बन गई। उन्होंने कुन्दनपुर के लोगों से सम्पर्क किया। पुराने पटवारी अर्जुनलाल ने बताया कि सभी जमीन मय बगीचे के गिरवी रखी हुई है। बैनामा या रजिस्टरी नहीं की गई है। उन्होंने उन लोगों से भी सम्पर्क किया जिनके कब्जे में जमीनें थी। कौन नहीं चाहेगा कि किसी का उजड़ा हुआ आशियाना फिर से आबाद हो जाय।

प्रमोद के मामाजी पुनः रतनपुर अपने गाँव आ गये। हफ्ते भर में उन्होंने रूपये जुटाये और कुंदनपुर आ पहुँचे। पहले ही बता दिया था कि कुन्दनपुर एक आदर्श गाँव है और यहाँ के निवासी खाते पीते भले आदमी हैं। उन्होंने पहले बीस बीघा खेत मय बगीचे के छुड़ा लिया। प्रमोद के मामाजी कुन्दनपुर रूक गये और प्रमोद उनकी अनुपस्थिति में घर गृहस्थी की देखभाल कर रहा था। प्रमोद के मामाजी ने ग्रामवासियों के सहयोग से जंग लगे मकान का ताला तुड़वा कर बिखरे हुए सामान को व्यवस्थित कर सफाई करवायी। चार कमरे जो जर्जर हो गये थे, उनकी मरम्मत करवा कर उन्हें रहने लायक बनवा दिया। गाँव की सभा में सभी लोगों ने नये आने वाले प्रमोद और मालती को सहयोग करने लिए वचन लिया। समय बड़ा बलवान होता है। समय ने करवट ली और एक दिन शुभ मूहूर्त में प्रमोद और मालती को लेकर उनके मामाजी कुन्दनपुर आ गये। प्रमोद ने आते ही गाँव वालों और पड़ासियों से

संपर्क किया। सभी ने तहे दिल से उनका स्वागत किया। वह धीरे धीरे अपनी गृहस्थी स्वयं संभालने लगा।

इधर कंचनपुर में भी प्रमोद के पुनः कुन्दनपुर में बसने की घटना सोना और बंशीधर को लोगों के द्वारा ज्ञात हो गई। 'सोना' में उम्र के साथ साथ अब मानवता भी बढ़ती जा रही है। अपने गाँव कंचनपुर की कई स्कूलों में उसका नाम भामाशाहों की सूची में है। अब वह केवल नाचने गाने वाली सोना नही रह गई। गाँव के सम्भ्रान्त लोग उसको अब अच्छी निगाहों से देखने लगे हैं। धन्धा कोई भी बुरा नहीं होता यदि उसे ईमानदारी और वफादारी के साथ निभाया जाए। बंशीधर से भी सोना को उतना लगाव नहीं रह गया है। वे जायें कहाँ, सोना के कारण उनके सारे दरवाजे पहले से ही बन्द हो चुके हैं। बस दिन काटना है और किसी तरह काट रहे हैं। कुन्दन पुर की ओर तो वे रूख भी नहीं कर सकते। कौन सा मुँह लेकर जाएँगें। मनुष्य एक बार कोई बड़ी गलती कर देता है तो उसका अनुताप जीवन भर भार बनकर उसके सिर पर सवार रहता है। यह वह काला दाग है जिसको धोने में सागर का भी जल कम पड़ता है। पंडित बंशीधर जो किसी समय कुन्दनपुर की नाक थे। आज कंचनपुर में सोना की बैठक में हर वक्त चारपाई पर लेटे हुए व्यतीत दिनों को याद कर घुट घुट कर जी रहे हैं।

अप्रैल माह की तपती दोपहरी में प्रमोद अपने बगीचे के पास स्थित पुराने कुँए की सफाई कर रहा है, ताकि पासवर्ती बीस बीघा जमीन की सिंचाई कर अच्छी फसलें उगाई जा सके। कब मामाजी का सहयोग बन्द हुआ कि गृहस्थी चलना मुश्किल हो जाए। उनकी भी तो भरी फूली गृहस्थी है। कब तक इस तरह पराश्रित रहकर जीवन यापन करना होगा? कुआ साफ किया जा रहा है। भोजन करने के लिए मजदूर घर जा चुके हैं। मालती ने प्रमोद

का खाना वहीं भेज दिया है। प्रमोद खाना खाकर बगीचे के पूर्वी किनारे पर स्थित पीपल की शीतल छाया में विश्राम कर रहा है।

उसी समय पाँच लोगों का एक समूह थका माँदा आया। साथ में एक प्रौढ़ा स्त्री भी है। वे लोग भी पीपल की शीतल छाँव में बैठ कर आराम कर रहे हैं। उस स्त्री ने कहा "भई! यहाँ पानी मिलेगा क्या? हम लोग प्यासे हैं।" प्रमोद ने "कहा क्यों नही?" उसने रखे हुए मटके की ओर संकेत किया तथा भेली (गुड़ की डली) देकर पानी पिलाया। वह औरत भी एक टक प्रमोद की ओर देख रही है। उस औरत ने पूछा कि बेटे तुम्हारे पिता का क्या नाम है? प्रमोद ने तपाक से उत्तर दिया "पिता नहीं माता का नाम पूछो। मेरे पिता तो बचपन में ही समझो मर गये। माँ का नाम मालती मिश्रा है। पिता ने कंचनपुर की एक तवायफ को रखैल बना लिया उसी के कारण सारा घर स्वाहा हो गया।" सोना ने सारी बात समझ ली। उसे काटो तो खून नहीं। बंशीधर उस दिन साथ नहीं गये थे। वे घर ही आराम कर रहे थे। कई दिनों से उन्होंने खाट पकड़ रखी है। वे बीमार हैं। शरीर में बुखार तथा घुटने में दर्द है। वे भी अब वृद्ध हो चुके हैं।

सोना को प्रमोद की शकल सूरत का भान प्रतिपल हो रहा था। रास्ते भर वह यही सोचती रही कि उस मासूम बालक ने उसका क्या बिगाड़ा था? गलती हम दोनों ने की किन्तु उसका खामियाजा वह भोला भाला लड़का प्रमोद भुगत रहा है। बार–बार सोना के हृदय में यह ध्वनित हो रहा है। वह प्रमोद की शक्ल सूरत भुलाने पर भी नहीं भूल रही है। घर पहुँच कर सोना ने बंशीधर को खूब खरी खोटी सुनायी। यदि कोई अन्य सहारा होता तो बंशीधर वहाँ कदापि नहीं रूकते, किन्तु क्या करें वे वहाँ से कहाँ जायें? कहाँ वे मुँह दिखायें? उनके लिए यह विशाल दुनियाँ छोटी और सीमित हो गयी है।

बंशीधर का संसार सोना का विशाल हृदय और उसके घर की चार दीवारी तक ही सिमट गया है। वह बार–बार प्रमोद से मिलना चाहता है किन्तु कौन सा मुँह लेकर मिले। उसने कौन सा उसका उपकार किया है? उसी के कारण ही तो उसके अमन चैन की दुनियाँ में आग लग गयी थी। उसी के कारण उसका हरा भरा चमन उजड़ गया। प्रमोद उसी के कारण आज भयंकर यातनाएँ भुगत रहा है। पढ़ा लिखा सुन्दर नवयुवक है। यदि उसे उचित संरक्षण मिलता तो वह डॉक्टर या इन्जीनियर बन जाता। उचित निर्देशन और संरक्षण के अभाव में प्रति वर्ष न जाने कितने कालिदास ओर शेक्सपीयर दफना दिये जाते हैं।

प्रतिभाएँ उचित निर्देशन और आर्थिक कठिनाई के कारण जंगलों में भटक–भटक कर भेड़ बकरियाँ चराने के लिए मजबूर हो जाती हैं। रात में सोना को इसी उधेड़बुन में सोचते सोचते नींद नहीं आई। उसकी नींद हिरन हो उठी और प्रमोद के भोले भाले चहरे के इर्द गिर्द चक्कर काटने लगी।

प्रमोद ने घर जाकर अपनी माँ मालती को बताया। उसे सुनकर आश्चर्य हुआ। वह समझ गई कि पीपल की छाया में सुस्ताने वाली वह औरत और कोई नहीं है सोना के अतिरिक्त। वे पाँच व्यक्ति वाद्यकर्मी सोना के आर्केष्ट्रा के लोग ही होंगे।

प्रमोद के मित्र रमेश ने भी बात और पक्की कर दी। उसने कहा कि कल सोना अपने आर्केस्ट्रा मंडली के साथ वहाँ से चार पाँच कोस दूर किसी गाँव में नाचने गाने का कार्यक्रम पूर्ण कर लौटी है। उसने यह भी कहा कि मैंने अच्छी तरह देख लिया था, उसके साथ बंशीधर नहीं थे। शायद बंशीधर अब वृद्ध हो चले हैं। उनसे कहीं जाया नही जाता और जाये कहाँ।

सूरदासजी की वह पंक्ति "जैसे उड़ि जहाज का पंखी, पुनि जहाज पर आवै। मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।" अर्थात् समुद्र के मध्य यदि जहाज हो तो उसका सहारा लिए हुए पक्षी को आप बार बार उड़ायेंगे तो भी वह पुनः उस जहाज पर ही आयेगा और जाएगा कहाँ? ठीक यही हालत पंडित बंशीधर की हुई है। आज अपने घर होते तो वह प्रतिष्ठा वह सेवा.....। आज वह सुख दुर्लभ है। उनका सुख दुःख सोना की दया मनसा पर निर्भर है। यदि सोना चाहे तो क्षण भर में उन्हें घर से निकाल दे तब क्या होगा? 'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का' भीख माँगने के लिए मजबूर हो जाऐंगे। दर दर भटकने के अलावा और क्या बचा है?

आस पड़ोस के साथियों ने प्रमोद को बताया कि उसका क्या कसूर? कसूर तो आप के पिताजी का है, जिन्होंने जवानी के उन्माद में अन्धा होकर अपना सब कुछ लुटा दिया। उससे मिलने में क्या हर्ज.....?

सिर के भार से अपमान का भार अधिक पीड़ादाई होता है। यद्यपि प्रमोद की गृहस्थी अब दिनोंदिन जमती जा रही है फिर भी वह संशेकित रहता है कि कोई उससे उसके पिता के बारे में कुछ कह न दे। उसे अजीब लज्जा और अपमान का भय प्रतिपल बना रहता है।

घर आकर खाना खाता है और फिर सारा दिन खेत पर ही बिता देता है। 'मालती' समय पर खाना पका देती है और पूरा दिन घर की सफाई तथा साज सज्जा में बिता देती है। पीहर रतनपुर से भाई ने एक गाय भेजी है। गाय देखने में तो डीलडौल की छोटी लगती है पर पक्के पाँच किलो दूध दोनों वक्त देती है। मालती और प्रमोद दोनों गाय की सेवा मन लगाकर करते हैं। थोड़े ही समय में प्रमोद की मेहनत रंग लायी और खाने पीने की कोई

कमी नहीं है। सायंकाल प्रमोद के पास उसके हमजोली रमेश, सुरेन्द्र आकर बैठते हैं और विचारों का आदान प्रदान होता है।

मालती की चारपाई रात भर चिन्ताओं के भार से बोझिल रहती है। वह प्रमोद की शादी के बारे में चिन्तित रहती है। गाँव में प्रमोद के सभी हमजोली साथियों का विवाह हो चुका है। खाली प्रमोद का विवाह नहीं हुआ है। रिश्ता लेकर यदि कोई आता भी है तो बंशीधर और सोना की प्रेम कथा सुनकर फिर कभी कुंदनपुर की ओर मुँह नहीं करता। मालती यही सब सोचे जा रही है। अब बढ़ती हुई उम्र के साथ उसे रोटी–भोजन पकाने में आलस्य आने लगा है। आज यदि प्रमोद की शादी हो गई होती तो कम से कम भोजन तो पका पकाया मिलता। सभी प्रकार की सुविधाएँ उसके पास है। प्रमोद ने धीरे धीरे सभी साधन जुटा लिए हैं। केवल एक नये प्राणी की आवश्यकता है, जो मालती को सहारा दे सके।

आज सवेरे चार सज्जन आकर प्रमोद की बैठक में बैठ गये। वे शादी का रिश्ता लेकर आये थे। मालती ने रमेश और प्रमोद के अन्य साथियों को बुला दिया था ताकि प्रमोद यदि शर्माए तो भी मेहमानों का सत्कार ठीक से किया जा सके। अच्छी प्रकार से मेहमानों का सत्कार किया गया। उन लोगों के साथ प्रमोद के मामाजी भी थे। कुंडली मिलान की गई। सब कुछ ठीक ठाक रहा। गुण भी बैठ गये। जब बात बंशीधर की आयी तो मेहमानों ने कहा कि "घर जाकर तिलक आदि का दिन पक्का किया जाएगा" और वे चले गये। कई दिनों तक आशा निराशा में सभी इन्तजार करते रहे, पर उधर से किसी प्रकार की कोई सूचना नहीं आई। एक बार फिर 'मालती' के सारे अरमानों पर पानी फिर गया। बहुत से रिश्ते आये किन्तु कोई भी रिश्ता तय नहीं हुआ। कोई न कोई जाकर चुगली कर देता या

कहीं से उन्हें पता चल जाता कि "प्रमोद उसी बंशीधर मिश्रा का पुत्र है जो अब भी घर बार छोड़ कर सोना नामक एक तवायफ के साथ रहता है।" गावों में इस प्रकार की बातों को बड़ा महत्त्व दिया जाता है। दागी कुल में कोई भी प्रतिष्ठित या खानदानी आदमी अपनी पुत्रीं नही ब्याहना चाहता।

इधर प्रमोद का घनिष्ठ मित्र रमेश इलाहाबाद अपनी पढ़ाई सम्बन्धी कार्य से गया हुआ था। उसने सोचा कि अपने पूर्व के प्रोफेसर (डॉ.) देवेन्द्रनाथ शुक्ला से मिलकर पढ़ाई की भावी योजना बनाई जाय। (डॉ.) देवेन्द्रनाथ शुक्ला अपने विषय भूगोल के अच्छे जानकार तथा महाविद्यालय के छात्रों में प्रिय हैं। रमेश उनके घर बेझिझक अपने घर की भाँति स्नातक की पढ़ाई के दिनो में रहता था। भूगोल का छात्र होने के नाते ही डी.एन. शुक्ला से उसका अच्छा लगाव था।

जाते ही डी.एन. शुक्ला ने बड़े स्नेह से रमेश को बिठाया और चाय–पानी पिलाया। डी.एन. शुक्ला भी कुन्दनपुर के पास के ही रामपुर गाँव के रहने वाले थे। इलाहाबाद में भूगोल विषय के प्रोफेसर हैं तथा उनका परिवार अब इलाहाबाद में ही रहता है। परिवार में दो बेटे और एक बेटी नमिता शुक्ला उन्हीं के पास रहते हैं। शेष परिवार गाँव रामपुर में रहता है। डी.एन. शुक्ला ने रमेश से पूछा कि "रमेश कोई शादी लायक अच्छा लड़का बता। नमिता अब बी.एस.सी पास कर चुकी है। पी.एम.टी में असफल होने के कारण उसे अब एम. एस.सी कराने का विचार है, किन्तु पहले उसकी शादी करना चाहता हूँ। घर में मेरे माता–पिता 'नमिता' की शादी जल्दी कराना चाहते हैं। हमारे माता पिता पुराने विचारों के हैं वे अपने जीते जी पोती का हाथ पीला करना चाहते हैं।"

रमेश ने थोड़े समय पश्चात् कहा कि डॉ. शुक्लाजी हमारे गाँव में बंशीधर मिश्रा का भला खाता पीता परिवार रहता था। यकायक उस परिवार के विकास को ग्रहण लग गया। उसने संपूर्ण कहानी प्रारम्भ से अन्त तक डॉ. डी.एन. शुक्ला को बता दी और यह भी बताया कि उन्हीं का सुन्दर सुस्वस्थ तेईस वर्षीय पुत्र 'प्रमोद' अब पुनः घर और खेती बाड़ी संभाल रहा है। प्रमोद प्रथम श्रेणी में स्नातक है और व्यवस्थित हो जाने के पश्चात् अध्ययन जारी रखना चाहता है। प्रमोद की माँ मालती पढ़ी लिखी सरल स्वभाव की महिला है।

बस केवल यही एक कमी है कि बंशीधर ने तवायफ रख ली है। घर छोड़ कर कंचनपुर उसी तवायफ सोना के साथ ही रहते हैं। प्रोफेसर डॉ. डी.एन. शुक्ला की पत्नी महिमाजी भी बड़े ध्यान से सुन रही थीं। डॉ. डी.एन. शुक्ला ने कुछ समय तक मौन रहने के पश्चात् पुनः रमेश से पूछा कि "बताओ रमेश! प्रमोद बंशीधर और सोना की प्रेमलीला वाली घटना से पहले पैदा हुआ था या बाद में।" रमेश ने बताया कि "जिस समय बंशीधर और सोना का प्रेमालाप शुरू हुआ, उसके पहले प्रमोद पैदा हुआ था। उस समय प्रमोद गाँव के प्राइमरी स्कूल में जाया करता था।"

रात भर डॉ. डी.एन. शुक्ला ने अपनी पत्नी और 'नमिता' के साथ विचार विमर्श किया। अगले दिन डॉ. शुक्ला का बड़ा पुत्र 'परेश' जो अमेरिका में इन्जीनियर था आ गया। उसको भी पंडित बंशीधर और सोना के बारे में सारी बात डॉ. डी.एन. शुक्ला ने बतायी और कहा कि केवल उसी कलंक के कारण प्रमोद के जो रिश्ते आते हैं कटते जा रहे हैं। परेश ने भी यह कहा कि "पिताजी प्रमोद और इस कलंककारी घटना से कोई सम्बन्ध ही नहीं हैं। वह तो इसके पूर्व ही पैदा हो गया था, जब पंडित बंशीधर की तूती बोलती थी और गाँव में उसकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा थी। प्रमोद और मालती बेदाग हैं और जो दागी है बंशीधर, वे अब

बेदखल हैं। घर से उनका कोई रिश्ता नहीं है। मैं स्वीकार करता हूँ कि यह रिश्ता पूर्ण रूप से शुद्ध और पवित्र हैं।" आप जाइए देख लीजिए यदि ठीक बैठे तो कर लीजिए। 'महिमा' से पूछताछ की तो रतनपुर में मालती की उससे पुरानी रिश्तेदारी भी उजागर हुई। रिश्ता चाहे कितना भी पुराना हो पर रिश्ता बहुत गाढ़ा समझा जाता है। कहावत विख्यात है कि "तिल भर नात न भैंसे भर व्यवहार" तिल भर की रिश्तेदारी भी बहुत अधिक मित्रता और व्यवहार से बड़ी होती है।

दूसरे ही दिन डॉ. डी.एन. शुक्ला और उनके बड़े पुत्र 'परेश' जो अमेरिका में रहते हैं, मालती के पीहर चले आए। प्रमोद के मामाजी को साथ लेकर कुन्दनपुर के लिए रवाना हो गये। प्रमोद उस दिन अपने खेत पर कार्य कर रहा था। तीन मजदूर और प्रमोद धान की बुआई के लिए खेत की मेड़ों को और मजबूत कर रहे थे ताकि बरसात में कमाई हुई मिट्टी नहीं बहे, क्योंकि मिट्टी ही किसान का जीवन है। यदि उर्वर उपजाऊ मिट्टी ही बहकर अन्यत्र चली जाए तो किसान की अमूल्य निधि चली गई। डॉ. शुक्ला, परेश और प्रमोद के मामाजी पहले घर पहुँचे और पुनः प्रमोद को देखने के लिए खेत पर ही चले गये। प्रमोद मजदूरों के साथ काम करता हुआ पसीनो से तर हो रहा था। उसे देखकर डॉ. डी.एन. शुक्ला ओर 'परेश' फूले नहीं समाए तथा रिश्ते पर पक्की मुहर लग गई।

गाँव के सम्भ्रान्त बड़े बूढ़े व्यक्तियों को बुलाया गया। डॉ. डी.एन. शुक्ला ने कहा कि "बुन्धुओ! प्रमोद की पैदाइश बंशीधर और सोना के बुरे सम्बन्धों से पहले हो चुकी थी। इसमें इस मासूम का क्या दोष? प्रमोद पूर्णतः पवित्र और बेकसूर है। अतः मैं अपने पुत्री का रिश्ता प्रमोद से करने की घोषणा करता हूँ"।

गाँव के पंडितजी ने कुंडली मिलायी। उचित गुण और राशिओं का शुभ मेल बैठ गया। फिर क्या था एक नारियल, एक जोड़ी जनेऊ तथा ग्यारह सौ रूपये प्रमोद के हाथों पर शुभ कामनास्वरूप रख दिया। गाँव में चारों ओर यह चर्चा फैल गई। सभी लोग यह कहने लगे कि "बड़ा ही अच्छा हुआ।" 'मालती' ने खुशी के साथ चाय, पानी और नास्ता कराया। मेहमान भी संतुष्ट होकर अपने घर के लिए रवाना हुए। यह खुशखबरी चारों और फैल गयी। सोना ने भी किसी से यह बात सुनी। सोना के आँखों के समक्ष उसके कारण होने वाली विनाश लीला एक एक करके चित्रपट की भाँति दिखाई देने लगी। ग्लानि से उसका अन्तराल आन्दोलित हो उठा। यदि वह बंशीधर को जबरन कुन्दनपुर ले जाती तो अभी बात बिगड़ सकती थी। बड़े सबेरे ही अगले दिन बाजार का बहाना बनाकर वह कुन्दनपुर प्रमोद के खेत पर दाखिल हुई। प्रमोद खेत पर ही मिल गया। उसने प्रमोद को पहचान लिया और अपने पास बुलाया।

सोना ने कहा कि "प्रमोद बेटे! मैं ही वह बदनसीब औरत हूँ जिसने तुम्हारी भली फलती फूलती गृहस्थी में आग लगा दी थी। मैं उसका प्रतिकार करना चाहती हूँ। मैने सब कुछ जान लिया है। तुम्हारी मँगनी हो चुकी है। अगले सोमवार को तिलक है। तुम बुरा मत मानना मैं अपना फर्ज निभा रही हूँ। जमकर शान से तिलक की तैयारी करो। तिलक का सारा खर्च मैं वहन करूँगी। कल ही सामान और तिलक का सारा खर्च तुम्हारे पास रात में पहुँच जाएगा। बस, मुझे रोकना मत। मैं भी तुम्हारी माँ लगती हूँ। विवाह के दिन मैं ही तुम्हारे ससुराल जाकर नाचूँगी और मेरी ही पूरी मंडली कार्यक्रम करने जाएगी। हाँ इतना अवश्य है कि प्रोग्राम का बाकायदा सट्टा लिखा जाएगा।"

प्रमोद ने आकर अपने साथी रमेश और कुछ लोगों को यह बात बता दी। सभी ने कहा ठीक ही तो है, जो वह करती है, उसे करने दो। दूसरे ही दिन रात को दो गाड़ियो में भर कर तिलक में काम आने वाली सारी सामग्री सोना ने भिजवा दी। गाड़ी वाले ने खेत से प्रमोद को बुलवाया। सारा सामान प्रमोद को संभालने के लिए कहा और साथ में बारह हजार रूपये की थैली भी सौंप दी। तिलक का दिन आ गया। बड़े सबेरे से ही सारी व्यवस्था होने लगी। प्रमोद के मामाजी, उनके दोनों बेटे, मालती तथा पूरा मोहल्ला तैयारी में जुट गया। बैण्ड बाजे से लेकर सारे ठाट बाट देख कर लोग चकित हो गये। डॉ. डी.एन. शुक्ला ने भी अपने मित्रों और सगे सम्बन्धियें के साथ आकर विधिवत तिलक की रश्म अदा की। प्रमोद की सुन्दर खातिरदारी और गजब की व्यवस्थ देख कर सभी चकित हो गये।

आने वाली सत्तरह मई का दिन शुभ विवाह के लिए निश्चित किया गया। बारात में मनोरंजन के लिए 'सोना' की मंडली का सट्टा लिखाया गया और विवाह की तैयारियाँ कुन्दनपुर और रामपुर दोनों गावों में जोरशोर के साथ प्रारम्भ हो गयी।

जवानी का जोश बड़ा विकराल होता है। यदि उस समय बुद्धि का अंकुश न लगे तो वह मर्यादाओं के सभी पुलों को क्षण भर में ही तोड़ डालता है। क्या कण्व ऋषि के आश्रम में पालित पोषित मेनका पुत्री शकुन्तला कम गम्भीर और कम सूझबूझ वाली थी? किन्तु वही शकुन्तला, राजा दुष्यन्त के चिन्तन में इतनी तल्लीन थी कि दुर्वाशा ऋषि की उपस्थिति का भी उसे आभास नहीं हुआ। अनायास ही शकुन्तला कुपित ऋषि के कोप का पात्र बन कर घोर शाप का शिकार बनी।

विवाह का दिन निकट आ रहा था। दोनों परिवारों की व्यस्तताएँ बढ़ती जा रही थी। डॉ. डी.एन शुक्ला का घर राजा जनक के दरबार की तरह सजाया जा रहा है। सभी लोगों

का प्रयास यही है कि आदर भाव साज सज्जा में कोई कमी नहीं रह जाय। इधर मालती ने भी अपने भाई साहब ओर भतीजों को कुन्दनपुर बुला रखा है। सभी लोग तरह तरह के सामान जुटाने में व्यस्त हैं। प्रमोद के साथ उसके हमजोली साथियों की एक टीम है। यह टीम दिन रात दौड़ रही है।

बारात का दिन अत्यन्त चहल पहल का होता है। उस दिन तो केवल मेहमाननवाजी ही की जाती है। जो करना है इसके पूर्व ही कर लेना चाहिए। सभी रिश्तेदारों ओर मित्रों की टीम की सहायता से सारे सामान और आभूषणों आदि की खरीद हो चुकी है।

बारात के दिन प्रमोद की मित्र मंडली भी सज धज कर व्यवस्था कर रही है। अलग–अलग गाड़ियों में उम्र के अनुसार बैठ कर जाने वालों की सूची तैयारी की जा रही है। बैण्ड बाजे वालों के लिए अलग गाड़ी है। नाच गाने वालों अर्थात् सोना के आर्केस्ट्रा के लिए अलग गाड़ी है।

ठीक तीन बजे दोपहर के पश्चात् बारात रामपुर के लिए रवाना हो गई। चारों ओर चहल पहल से वातावरण गुंजायमान है। गाँव के सभी लोगों की इच्छा 'सोना' जो कंचनपुर की सोना के नाम से विख्यात है, का कार्यक्रम देखने के लिए प्रबल है। उस दिन बाल मंडली के साथ साथ आसपास के गाँवों के लोगों के मन में सोना की एक झलक पाने की ललक बढ़ती जा रही है।

बंशीधर सोना के आर्केस्ट्रा के साथ नहीं गये। वे कंचनपुर ही रहे। इसके लिए सोना ने उन्हें पहले से कह दिया था। बंशीधर की मनः स्थिति पागलों जैसी होने लगी। आदमी कभी कभी जवानी के जोश में अन्धा होकर ऐसा कदम उठा लेता है जिसकी भरपायी कभी नहीं कर पाता है। कौन सा मुँह लेकर जाते और जनता तथा सभी लोगों पर इसका क्या

प्रभाव पड़ता? वे सोना की हवेली में खाट पर बैठे हुए हैं। रोने के अतिरिक्त कोई और चारा नहीं है। पूर्वकृत कुकृत्य पर पश्चाताप के आँसू बहा रहे हैं। उस समय उन्होंने नहीं सोचा था कि हमारे परिवार का क्या होगा? मालती और प्रमोद कैसे रहेंगे? कुन्दनपुर वासी उनके परिवार की प्रतिष्ठा की कैसे धज्जियाँ उड़ाएगें? सोना के रूप और यौवन के नशे में सब कुछ भूल कर सूना हो गये थे। आँखो से बहते हुए आँसू क्या उसके हृदय की उठती हुई वेदनाओं को शान्त और हल्का करने में सक्षम होंगे? कदापि नहीं।

प्रोफेसर डॉ. डी.एन. शुक्ला के दरवाजे पर बारात गाजेबाजे के साथ पहुँची। द्वार चार की रस्म बड़े धूमधाम से पूरी हुई। रामपुर में बारातियों का जैसा स्वागत सत्कार हुआ वैसा कहीं अन्यत्र नहीं हुआ था। बारातियों को खान पान से फुरसत मिलने पर सोना की मंडली ने नये नये मनोरंजनों की भरमार लगा दी। सोना ने ऐसी शमा बिखेरी कि क्या बाराती क्या घराती और वहाँ की क्षेत्रीय जनता सभी ने वाह–वाह के नारे लगाये तथा मंडप तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। वह रात सुहानी रात थी, उसे ताराछायी रात भी कह सकते हैं। सभी लोग थके माँदे विश्राम कर आने वाले प्रभात की प्रतीक्षा कर रहे थे। शुक्ला परिवार रातभर 'नमिता' की विदाई की व्यवस्था में लगा रहा। सवेरे के समय बाराती लोग दैनिक चर्या से निवृत्त होकर चाय नास्ता कर रहे थे। विदाई के पहले बारात दूल्हन के दरवाजे पर मय नाच बाजे के साथ जाती है। 'सोना' अपनी मंडली के साथ डॉ. डी.एन. शुक्ला के दरवाजे पर अपनी कला बिखेर रही थी। बाराती लोग तरह तरह के पकवानों का लुत्फ ले रहे थे।

उसी समय सोना ने दूल्हन से मिलने और उपहार देने की अनुमति माँगी। उत्तरप्रदेश में सबेरे के समय जब बारात दूल्हन के दरवाजे पर सत्कार लाभ लेती है तो गजब की

समरसता का आभास होता है। घराती बराती सभी एक साथ होकर आनन्द विभोर हो जाते हैं।

डॉ. डी.एन शुक्ला ने खुशी दिल से अनुमति प्रदान कर दी। सोना नाचते गाते हुए घर के अन्दर गई। महिमा और नमिता के अतिरिक्त गाँव की सभी स्त्रियाँ और रिश्तेदारी में आई हुई सभी औरतों के सामने उनकी उपस्थिति में वही कीमती हुमेल जिसमें बीस असर्फियाँ गुँथी हुई थी उतार कर नमिता के गले में डाल दी। क्षण भर के लिए सभी लोग आवाक हो गये। थोड़ी देर के लिए चहल पहल के बीच में सन्नाटा छा गया। सभी स्तब्ध हो गये और समझ गये कि यह वही तवायफ है जिसके कारण अतीत में इस हरी भरी फलती फूलती गृहस्थी को पाला मार गया था।

पुनः सोना ने बाहर आकर अपना नाच गाना प्रारम्भ किया। "खुशिओं के दिन अब आए, दुःखों दिन अब हिरन हो गये, सबके मन को भाये रै भाई, खुशिओं के दिन आए" बीस असर्फियों वाली हुमेल पहनाते हुए नमिता से सोना ने कहा "बेटी! फलो फूलो! जीवन में सभी से गलतियाँ होती है। मनुष्य गलतियों का पुतला है। गलतियों को स्वीकार कर उसका निराकरण करना एक महान् कार्य है। पतन और उत्थान दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। पतन दुर्भाग्यवश यदि हो जाय तो फुटबाल की तरह हो जो गिर कर पुनः उठ जाय, किन्तु उस लोहे की तरह न हो जो एक बार गिर कर फिर कभी नहीं उठे। यही है वह बीस असर्फिओं वाली बेशक कीमती हुमेल जिसने तुम्हारे समूचे परिवार को दावानल की भाँति जला कर खाक कर दिया था। मेरा फर्ज कहता है कि मैं अपने किये हुए का प्रतिकार, हुमेल प्रतिदान के रूप में करूँ। चारों ओर यह बात वनाग्नि की भाँति फैल गई। जो लोग सुनते, सोना के प्रतिदान की प्रशंसा किये बिना नहीं रहते।

डॉ. डी.एन. शुक्ला और प्रमोद के मामाजी भी सुन कर स्तंभित रह गये। सोना के इस प्रतिदान से उनका हृदय अजीब सादर साधुवाद से भर उठा। डॉ. डी.एन. शुक्ला और उनके परिवार ने नम आँखो और भारी दिल से नमिता को विदा किया। बारात पूर्ण उत्साह के साथ विदा होकर कुन्दनपुर आ पहुँची। पड़ोस के सभी लोग संतुष्ट थे। 'नमिता' ने कुन्दनपुर आते ही घर गृहस्थी संभाली। गाँव में सभी लोग यही कहते थे कि मालती ने इतनी गुणवती बहूँ लाकर घर की पूरी रौनक फिर वापस ला दी अब पुनः पहले की भाँति शाम सवेरे लोग–बाग प्रमोद के घर आने लगे तथा चाय–पानी जो कुछ होता उनका अच्छी तरह से सत्कार होता। प्रमोद ने बंशीधर की खोई हुई प्रतिष्ठा को फिर से कुन्दनपुर में स्थापित कर दिया। शादी ब्याह मरना जीना हर अवसर पर प्रमोद की उपस्थिति के बिना काम नहीं चलता था। समय बड़ी तेजी से भागता है। मालती भी धीरे धीरे बुढ़ापे की ओर अग्रसर होती जा रही है। घर में मालती को नमिता के आने से बड़ी राहत मिली। पुराने दुःखों को भुलाने के लिए प्रमोद और नमिता शीतल लेप का काम कर रहे हैं। नमिता मालती के पैरों को सहलाएँ बिना कभी नहीं सोती थी। सौभाग्य से ऐसी पढ़ी लिखी और शालीन बहूँ मिलती है।

कंचनपुर पहुँच कर सोना ने संपूर्ण घटना बंशीधर को बता दी। विवाह के ठाटबाट और अच्छी खातिरदारी के बारे में उसने बताया। बंशीधर क्या कहते? उनकी हालत उस कटे वृक्ष की तरह हो गई जिसकी जड़े जमीन में तो ही है किन्तु पनप नहीं सकती। मनुष्य को कभी भी अपनी धरती से नहीं कटना चाहिए। जो अपनी धरती से एक बार कट जाता है उसके जुड़ने में बड़ी कठिनाई होती है। इसलिए कहा गया है कि "मनुष्य की तुलना चिड़िया

की उन्मुक्त उड़ान से नहीं की जा सकती अपितु उस पेड़ से की जा सकती है जिसका सिर आकाश में तथा जड़े जमीन के अन्दर होती है"।

उन्होंने कोई प्रतिकार नही किया। सुनकर मौन रहे। सोना ने अपने प्रतिदान के बारे में भी बता दिया। वह कीमती बीस असर्फिओं वाली हुमेल अब नमिता की है। उसने उसे नमिता को मुँहदिखाई के उपहारस्वरूप भेंट कर दिया। तब बंशीधर ने मौन तोड़ा और कहा "वह मेरे द्वारा प्रदत्त प्रथम भेंट तुम्हें थी। उसका अब मुझे क्या हक है? जो कुछ तुमने किया शायद ठीक ही किया होगा। मैं सही गलत का निर्णय करने में सक्षम नहीं हूँ। अवसादग्रस्त हूँ। मुझे मौन रहकर पश्चाताप करने दो। मेरी धरती मेरा गाँव अब मुझसे बहुत दूर है"। इतना कहकर बंशीधर फफक फफक कर रोने लगे। उनके आँसूओं का पुल टूट गया। सोना ने पुनः बंशीधर को आश्वासन दिया तथा शेष जीवन सुख पूर्वक यापन करने हेतु प्रेरित किया। बहुत समझाने के पश्चात् बंशीधर ने उस दिन खाना खाया।

शादी के बाद से सोना अभी तक प्रमोद से नहीं मिली थी। प्रमोद से मिलने की इच्छा उसे बार बार होती थी। सोना ने सोचा की शायद प्रमोद यह नहीं समझे कि "यह हमारी चलती हुई गृहस्थी में पुनः बाधक नही बन बैठे।" एक बार सोना को बाजार में प्रमोद संयोगवश मिल गया। उसने उसे पाँव छूकर प्रणाम किया। सोना का सोया हुआ वात्सल्य पुनः जाग गया।

आज मालती के घर में अपार प्रसन्नता छाई हुई है। नमिता ने गर्भधारण कर लिया है। कुछ ही दिनों में प्रमोद के आँगन में एक नया मेहमान आने वाला है। इस मेहमान के आते ही मालती के जीवन भर के दुःख अपार खुशियों में बदल जायेंगे। कहते है कि "नरकात त्रायते इति पुत्रः" अर्थात् जो नरक से छुटकारा दिलाए उसी का नाम पुत्र है।

नमिता के गर्भधारण समाचार से रामपुर में डॉ. डी.एन शुक्ला का परिवार भी प्रसन्नता से उछल पड़ा। जब परिवार को चलाने के लिए अगली पीढ़ी का आगमन हो तो सभी लोग प्रसन्न होते हैं।

'कुमार रघु' के लिए राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणा के भगीरथ तप से सभी लोग अवगत हैं। 'नन्दिनी' की रात दिन अनन्य सेवा के उपरान्त ही 'कुमार रघु' जैसी ओजस्वी सन्तान अगली पीढ़ी को चलाने के लिए वरदानस्वरूप प्राप्त हुई। 'नमिता' को प्रसव वेदना हुई और गाँव के अस्पताल में दाखिल कराया गया। इस समाचार से कुन्दनपुर के साथ साथ नमिता के पीहर रामपुर में भी खुशियों का आलम छा गया। नमिता ने पुत्र रत्न को जन्म दिया।

चारों ओर सभी लोग अत्यन्त प्रफुल्लित हो गये कि प्रमोद के पुत्र रत्न पैदा हुआ है। यह खबर कंचनपुर भी पहुँच गई। 'सोना' भी अत्यन्त प्रसन्न हुई। मन ही मन बंशीधर भी प्रसन्न हुए, किन्तु उन्होंने इस खुशी को प्रकट नहीं किया। नवजात शिशु के लिए सोना ने खिलौने और वस्त्र गाँव के नाई के साथ प्रेषित किए। पहले तो मालती इसे स्वीकार नहीं कर रही थी, किन्तु कुछ ग्रामीण पड़ोसियों ओर रिश्तेदारो के आग्रह से उपहार स्वीकार कर लिया। नाई को उचित पुरस्कार देकर सम्मान पूर्वक विदा किया गया। समय बहुत बड़े से बड़े जख्म को सुखा कर ठीक कर देता है।

बालक की प्राप्ति की सूचना से सोना प्रसन्न तो थी ही पुनः बगीचे में आकर उसने प्रमोद से मुलाकत की और नामकरण संस्कार खूब धूमधाम से मनाने हेतु प्रेरणा दी। चलते समय इतना और कह गई कि "मैं नामकरण संस्कार के दिन आऊँगी। मेरे साथ मेरा पूरा आर्केस्ट्रा जश्न मनाएगा"। प्रमोद ने घर आकर गाँव के बड़े बूढ़े और अपने मित्रों से राय

माँगी। विचार विमर्श के पश्चात् सभी लोग सहमत हो गये। मालती के अतिरिक्त सभी लोगों ने सकारात्मक सहमति प्रदान की। मालती का घाव बड़ा गहरा था। उसकी क्षति पूर्ति में अभी समय लगेगा। मालती के प्रेम और उत्सर्ग के हरे वृक्ष को एक ही आघात और प्रहार से बंशीधर और सोना ने मिलकर काट दिया था तथा धाराशायी कर दिया था। उसे वे रातें स्मरण होने लगी थी जिन्हें बैठ बैठकर बिना नींद उसने काटी थी। एक एक रात छह मास से भी लम्बी प्रतीत होती थी। उन विवश रातों का हिसाब क्या सोना और बंशीधर दे सकते हैं?

समाज और समझौता ही उन भयानक रातों के हिसाब थे। दोनो महत्त्वपूर्ण विषय हैं। यदि समाज में रहना है तो समझौता करना समीचीन है। बिना समझौता के जीवन एकांगी बन कर अपनी सारी खुशियाँ सर्वदा के लिए खो देगा तथा नीरसता के सारहीन गर्त में निमग्न होकर अस्तित्व विहीन हो जाएगा।

नामकरण संस्कारोत्सव के दिन मालती के ह्रदय में अजीब हलचल और तूफान उठ रहे हैं। अतीत की याद, वर्तमान का समझौता उसे किंकर्तव्यविमूढ़ बनाए जा रहा था। अतीत और अर्वाचीन को भवरों में उसका वर्तमान चक्कर काट कर दिशाहीन हो रहा था। वह सोच रही है कि क्या किया जाए और क्या नहीं? जब सभी लोगों ने सोना के आगमन को सहमति प्रदान कर दी तो अकेली मालती का हठ, केवल हठधर्मिता साबित होगा। वह मौन थी, उसने न तो सहमति प्रदान की और न प्रतिरोध किया।

नाम संस्कार के दिन प्रमोद के घर चहल पहल देखने ही लायक है। गाँव में उल्लास छा गया है। गाँव के सभी लोगों को उल्लास है कि आज रात को सोना का कार्यक्रम चलेगा। समय पर सोना लगभग पाँच बजे सायं अपने आर्केस्ट्रा के साथ प्रमोद के घर आ

गई। बड़े धूमधाम के साथ नाच गान का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। बंशीधर कंचनपुर की सोना के घर ही बिराजमान रहे। उन्हें अब किसी प्रकार की रूचि नहीं रह गई है। वे अपनी दिनचर्या का निर्वाह किसी प्रकार कर रहे हैं यही क्या कम है? प्रमोद के खुशियों का कोई ठिकाना नही हैं।

वह इधर उधर कार्यक्रम की सारी व्यवस्था अपने साथियों के साथ संभाल रहा है। पंडितजी ने नवजात शिशु का नाम 'नवीन' रखने के लिए कहा। यह नाम सभी को पसन्द आ गया। पंडितजी ने अपनी दान दक्षिणा ली तथ भोजनोपरान्त घर का रास्ता लिया। कार्यक्रम आधी रात तक चलता रहा। सभी मेहमान प्रातः अपने अपने घर के लिए रवाना हुए। सोना भी प्रमोद से अनुज्ञा प्राप्त कर अपने आर्केस्ट्र के साथ जाने के लिए तैयार हुई। उसी समय प्रमोद घर के अन्दर गया और पाँच हजार रूपये लिफाफे में रख कर सोना को पकड़ा दिया। सोना ने बड़े संकोच के साथ लिफाफा पकड़ा और घर के अन्दर जाकर नवजात नवीन के हाथों पर रख दिया। मालती चौंक गई और रूपये वापस करने लगी।

सोना ने मालती का हाथ पकड़ लिया और कहा "बहन अब तो मुझे क्षमा कर दो। मैं पश्चाताप की अग्नि में जल रही हूँ। जवानी में मुझसे हुई भूल की सजा कब तक दोगी? मैं भी इसी परिवार की एक अंग हूँ। अब वह समय और वह जज्बा बहुत दूर चला गया है"। भीगी पलकों से मालती एक टकटकी लगा कर सोना की ओर देखती रही। सोना ने अपने आर्केस्ट्रा के साथ कंचनपुर की राह ली। मालती आवाक खड़ी रही मानो किसी अज्ञात दुनियाँ में खो गई हो।

मालती के अन्तराल में बार बार सोना का वह रूप और वाक्य झंकृत होकर वीणा के तारों की तरह झनझना उठते हैं। "कोई पास न रहने पर भी, जब मन मौन नहीं रहता। आप

आप की है कहता, और आप की है सुनता"। मैथिली बाबू की ये पक्तियाँ चरितार्थ हो रही थी।

सोना कंचनपुर अपने घर पहुँचते ही बंशीधर को चारपाई पर लेटा देखकर भावुक हो उठी। उसने बंशीधर के गालों पर सूखी हुई आँसुओं की रेखा स्पष्ट रूप से देखी और कहने लगी "बंशीधर आप बिलकुल निष्ठुर और कठोर हो गये हैं। मैं आज आपके पोते के नामकरण संस्कार में सम्मिलित होकर आयी हूँ। आपने एक शब्द भी उसके बारे में नहीं पूछा। आप कब तक इस प्रकार की जिन्दगी जीएँगे? मैं भी अब जीवन के अन्तिम पड़ाव पर हूँ। न जाने तोता कब इस पिंजड़े को छोड़ कर उड़ जाए तब क्या करोगे? कहाँ जाओगे? है कोई आशियाना? क्या करोगे? कोई संतान भी नहीं है कि जो मेरे मरने के बाद आप को दो रोटियाँ दे? क्या करोगे? चौराहे पर भीख माँगने के अलावा मुझे कोई साधन और नहीं दिखता है"। बंशीधर की आँखे आँसूओं से डबाडबकर भर गई। उनके जवानी के जोश और अहं ने उनकी यह हालत बना दी है। अब वे क्या करे? क्या मालती चाह कर भी उन्हें माफ कर पायेगी? बंशीधर उस दिन फूट फूट कर रोया। सारी रात उन्हें नींद नहीं आई। वे चाह कर भी मालती से माफी नही मांग सकते तथा मालती भी चाह कर उन्हें माफ नहीं कर सकती।

गाड़ी उस संकड़े मार्ग में फँस गई थी कि "आगे बढ़े तो कुआ और पीछे हटे तो गहरी खाई"। उनकी हालत उस सर्प की हालत के समान हो गई थी जिसने अपने मुँह में छछूँदर पकड़ रखी हो। यदि वह उसे छोड़ दे तो अन्धा हो जाए और निगल ले तो मर जाए । संसार अपार सागर है। मनुष्य का जीवन माहसागर की उठती हुई तरंगो में हिचकोले खाता है। कभी डूबता है तो कभी ऊपर आता है। सोना भी अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव

पर है। धीरे धीरे बढ़ती हुई उम्र के साथ निर्बलता अनायास क्षणभंगुर जीवन की याद दिला रही है। एक दिन बनारस से कार्यक्रम देकर लौटी और चक्कर आने लगा। उसके आर्केस्ट्रा के साथी दौड़ भागकर उसे अस्पताल ले गये। जाँच के बाद डाक्टर ने स्पष्ट कर दिया कि दिल का दौरा पड़ा है। प्रथम आक्रमण तो इन्होंने झेल लिया है, पर दूसरा झेलना मुश्किल है।

सोना पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा वह पक्के इरादों की महिला रही है। उसने सोच कि सम्पत्ति की वशीयत कर दी जाय। जाकर उसने अपना गुप्त वशीयतनामा करा दिया। उसके वशीयतनामा की प्रति तहसील कार्यालय में उसके लॉकर में रख दी गई।

आज प्रमोद खेत पर नहीं गया। मालती के साथ नवजात शिशु का टीकाकरण अस्पताल में कराना था। टीकाकरण कराकर वह घर लौटा। नमिता ने बैठक में ही मालती और प्रमोद के लिए भोजन की थाली लगा दी। खाना खाकर प्रमोद लेटा हुआ था कि कंचनपुर से एक आदमी मोटर साईकिल द्वारा आ गया। उसने प्रमोद को बुला कर संदेशा दिया और तुरन्त मोटर साईकिल पर बैठा और चल दिया। रात में ही सोना को पुनः हृदय का दौड़ा पड़ा। उसे अस्पताल ले जाया गया, किन्तु डाक्टर उसे बचा न सके ओर बड़े डाक्टर ने आकर पुनः जाँच किया तथा घोषित कर दिया कि सोना मर गयी। सोना बंशीधर को छोड़कर यमराज के घर का मेहमान बन गई।

सोना की मृत्यु की सूचना मिलते ही प्रमोद को मानो पाला मार गया। उसने गाँव से साथी रमेश को बुलाया और आठ दस साथी गाँव के और भी आ गये। सभी ने मोटरसाईकिल से कंचनपुर के लिए प्रस्थान किया। एक घण्टे के अन्दर ही सभी कंचनपुर पहुँच गये। सोना का शव जमीन पर पड़ा था। कुनबे का अन्य घर उस गाँव में कोई था

नहीं। जमीन पर बैठे हुए बंशीधर की आँखों से रह रह कर आँसू टपक रहे थे। पाँच छह आर्केस्ट्रा के लोग और ग्राम प्रधान की उपस्थिति में दस पन्द्रह लोग बैठ कर सलाह मशाविरा कर रहे थे।

इतने में प्रमोद अपने दस साथियों के साथ आ पहुँचा। सभी ने प्रमोद और उसके साथियों को देखकर ग्राम प्रधान को बुलाया। ग्राम प्रधान ने कहा कि इसके कुनबे का यहाँ कोई है नहीं। इसका परिवार बहुत पहले ही छूट गया था। बाढ़ और भयंकर शैलाब की विभीषिका से पीड़ित इसकी माँ बसन्ती ने सोना को साथ लेकर इस गाँव में शरण ली थी। बसन्ती के पास हुनर की कमी नहीं थी, उसने यहाँ सारा ठाट बाट अच्छे से जमा लिया। अब आप सब बताएँ इसका दाह किससे और कैसे कराया जाय? लाश पड़ी है, शवदाह तो करना ही है। प्रमोद बोल उठा "प्रधानजी आप कैसे कहते हैं कि इसका कोई नहीं है? मैं तो हूँ न..... चाहे जैसा हो भला या बुरा, किन्तु सोना का सम्बन्ध मेरे घर से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।" शव दाह की तैयारी होने लगी। प्रमोद के साथियों ने हरे बाँस की अर्थी, कफन और चाँदनी सब मँगवा कर मृतक की संपूर्ण रश्म संपादित करने में जुट गये। गाँव के सभी लोगों को सूचित किया गया। बहुत बड़ा हुजूम सोना के दरवाजे पर एकत्र हो गया। अर्थी उठाने से पहले प्रमोद ने रोते हुए पुनः कहा "सोना मेरी माँ है और मैं इसका पुत्र। मैं ही सोना का शवदाह करूँगा"। अपार जन समूह के साथ सोना की शवयात्रा "राम नाम सत्य है" के उदघोष से प्रारम्भ हुई।

अपार जन समूह गमगीन ह्रदय से सोना की अर्थी के पीछे पीछे चल रहा था। भगवान भुवन भास्कर अपनी मन्द मन्द रश्मियाँ उड़ेल कर मानो कह रहे थे "सोना तुम्हारा प्रारम्भ भले ही विकृत रहा हो, किन्तु अन्त अति प्रेरणादाई है। तुम्हारा यौवन उफनती हुई

नदी का उद्याम प्रवाह भले ही रहा हो, किन्तु वर्तमान मलयागिरि के चन्दन लेप की भाँति दूसरों को शीतलता प्रदान करने वाली तोषदायिनी संजीवनी है।" यही जीवन की सार्थकता है। ऐसा जीवन कहाँ मिलता है जीने के लिए?

लो, गंगा का तट निकट आ गया। सोना के जीवन की भाँति उसकी शवयात्रा अपने अन्तिम पड़ाव पर है। गंगा के तट पर सभी लोग बैठ गये। प्रमोद और उसके साथी लकड़ियाँ जोड़ कर चिता बना रहे हैं। बंशीधर आर्केस्ट्रा वालों के साथ बैठे हुए सिर लटका कर आँसू बहा रहे हैं।

प्रमोद और उसके साथियों द्वारा चिता बनाई जा चुकी है। सोना के शव को गंगा के पावन जल से प्रक्षालित कर चिता पर सुला दिया गया। सभी लोग गमगीन होकर सोना का अन्तिम दर्शन कर रहे हैं। प्रमोद अपने साथियों के साथ चिता की परिक्रमा करता है तथा चिता में अग्नि लगा देता है।

संध्या का समय है, चिता घूँ धूँ जल रही है। भगवान भुवन भास्कर अपनी मन्द मन्द स्मिति से मुस्कराते हुए संध्या का आँचल पकड़ कर अस्ताचल की ओर जा रहे हैं। मानों कह रहें हे कि "तूँ भी मेरी भाँति इस तूफान भरी जिन्दगी से क्लान्त होकर विश्राम को चली जा सोना। मौत विश्राम स्थल है। सोना अब तुम्हें इस कराहती हुई तूफानी जिन्दगी से त्राण मिल गया है"।

लोग–बाग गंगा के तट पर बैठे हुए शव जलने की प्रतीक्षा बड़ी आतुरता से कर रहे है। थोड़े ही समय में सोना का सोने जैसा कोमल कलेवर जलकर पंचतत्त्व में विलीन हो गया।

अपार जन समूह ने गंगा में स्नान किया तथा भीगे दिल से तिलांजलि अर्पित कर सोना को अन्तिम श्रद्धा◈जलि दी।

शव यात्री अन्त्येष्टि की रश्म अदा कर अपने अपने घरों की ओर मुखातिब हुए। चलते समय प्रमोद और उसके साथियों ने बंशीधर को अपने साथ घर लाने के लिए आग्रह किया। प्रमोद ने नम ह्रदय से कहा "अब यहाँ रहकर क्या करोगे पिताजी? आप का भरा पूरा परिवार है। आप संपूर्ण ग्लानि और पश्चाताप को यहीं छोड़ दो और घर चलो"। पहले तो बंशीधर ने इन्कार कर दिया। गाँव वालों, ग्राम प्रधान व प्रमोद के मामाजी की हठ के आगे उनकी एक न चली। हठपूर्वक प्रमोद ने उन्हें मोटर साईकिल पर बैठाया और रिश्तेदार तथा साथियों के साथ कुन्दनपुर के लिए रवाना हो गया।

कुन्दनपुर आते ही मालती फफक फफक कर एक तार रोये जा रही थी। सोना ने भले ही उसकी खुशियों भरी दुनियाँ में आग लगा दी थी किन्तु पता नहीं मालती को महसूस हो रहा था कि आज उसकी अपूर्ति क्षति हुई है। जब मालती ने बैठक में आते बंशीधर की और दृष्टि डाली तो आकाश तले धरती खिसक गई।

यह वही व्यक्ति है जो आज इतना लाचार और मजबूर दीख रहा है, जिसने कभी मालती की सारी खुशियाँ छीन कर उसकी सुखभरी जिन्दगी को नरक बना दिया था।

बंशीधर के आगमन से पूरे गाँव में तहलका मच गया। बंशीधर के अभिन्न मित्र दीनानाथ और गोपाल भी आ गये। सभी ने मिलकर तय किया कि बंशीधर घर में रहते हुए उसी प्रकार अलग रहेंगे, जैसे कमल पानी में रहता है, किन्तु कीचड़ और पानी से पृथक् रहता है। सभी ग्रामीण जन, मित्रों और रिश्तेदारों की उपस्थिति में बंशीधर की व्यवस्था घर के सामने वाली बैठक में की गई। वहीं पास में हैंडपम्प भी है। बंशीधर स्नान करते और

कपड़ा बदलते तब तक नमिता भोजन की थाली और पानी दे आती है। खाना खाने के पश्चात् बंशीधर रामचरित मानस हाथ में लेकर तख्त पर बैठ जाते और पाठ पूजा तथा चिन्तन मनन करते। उनके पुराने मित्र भी वहीं आते और घण्टों बाते करते रहते।

बंशीधर के सामने मालती कभी भी नहीं आती और उनसे बात भी नहीं करती। "बंशीधर और मालती एक ही नदी के दो किनारे हैं जो साथ साथ रहतं हुए भी कभी आपस में नहीं मिलते"। गृहस्थी में पुनः खुशिओं का आलम छा गया। प्रमोद और नमिता की सूझ बूझ से गृहस्थी की गाड़ी पुनः पटरी पर आ गई और अबाध रूप से चलने लगी।

सोना को मरे हुए दो सप्ताह, व्यतीत हो गये, पर लगता था जैसे कल की बात हो। आज सवेरे ही तहसील कार्यालय से एक व्यक्ति कुछ कागजात लेकर आया था। प्रमोद को तत्काल तहसील कार्यालय में उपस्थित होना है। प्रमोद ने अपने मित्र को बुलाया और दोनों साथी तहसील कार्यालय में तहसील अधिकारी के समक्ष उपस्थित हुए।

प्रमोद को अधिकारी ने बताया कि सोना ने मृत्यु के पहले उसके नाम अपनी संपूर्ण चल अचल संपत्ति वशीयत कर दी है। वशीयत में कंचनपुर का आलीशान मकान, दस बीघा जमीन तथा बैंक खाते में दस लाख रूपये प्रमोद पुत्र बंशीधर को सोना के मरणोपरान्त देने का विवरण है। वंशीयत नामा में यह भी लिखा गया है कि दस लाख रूपये बंशीधर की सेवा शुश्रूषा और आजीविका के लिए खर्च किया जाय। तहसील अधिकारी ने संपूर्ण कागजात प्रमोद को सौप दिए।

प्रमोद और उसके अभिन्न साथी खुशी दिल से कागजात लेकर घर आ गये। प्रमोद ने दूसरे दिन क्षेत्रीय गोष्ठी का आयोजन किया। सभी जन प्रतिनिधियों की राय से दस बीघा जमीन पर एक महाविद्यालय प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। जन सहमति से प्रमोद के

मित्र रमेश को विद्यालय का प्राचार्य तथा प्रमोद को संचालक नियुक्त किया गया। कंचनपुर का आलीशान मकान सोना की यदादास्त में गरीबों के लिए धर्मशाला के रूप में परिणत कर दिया गया।

पंडित बंशीधर अब प्रसन्न हैं। साम सबेरे वे अब पाठ पूजा में रत रहते हैं। उन्होंने सफेद या रंग बिरंगे परिधानों का परित्याग कर केशरिया वस्त्र धारण कर लिया है। वे अपना अधिकतर समय साधु संतो के साथ तीर्थाटन में लगाते हैं।

पाठक मित्रो! यह एक काल्पनिक लघु उपन्यासिका मात्र ही नहीं है अपितु जीवन की हकीकत है। सही घटना प्रतीत होती है। लिखने का अभिप्राय है कि जीवन में बड़ी से बड़ी भूलें हो सकती हैं किन्तु हमें उन्हें ग्रन्थि बाँध कर नहीं रखना चाहिए। इसके प्रतिकार हेतु अच्छे कार्य करना चाहिए। बुराइयों को सत्कर्मों से ही दबाया जा सकता है। सोना आज इस संसार में नहीं है, किन्तु उसकी प्रशस्ति के मोहक स्वरों की अनुगूँज जन जन के हृदय में व्याप्त है तथा सत्कर्मो की ओर अग्रसर होने लिए प्रेरणा देती है।

अपने किये हुए दुष्कर्मों को भूल जाओ और वर्तमान में ऐसे दुष्कर्म न हो तथा उनकी पुनरावृत्ति न हो, एतदर्थ सतत् प्रयास रत रहना चाहिए। जैसे सोना का बज्र व चट्टान के समान कठोर हृदय द्रवीभूत होकर, पिघल कर मोम सा मुलायम हो गया और प्रतिकार या प्रतिदानस्वरूप बीस असर्फियों वाला बेशक कीमती हुमेल मुँहदिखाई के रूप में उसी परिवार के उत्तराधिकारिणी को वापस कर तथा स्वकृत कुकर्मों को प्रक्षालित कर खरा कुन्दन बन गई। इसी प्रकार हमें भी उत्तरोत्तर सत्कर्मो की ओर अग्रसर होना चाहिए। बुराईयों का अवसान सत्कर्मों से ही संभव है।

मुझे गर्व है, मैं भारतीय हूँ और कर्त्तव्य निष्ठा से संकल्प लेता हूँ /लेती हूँ कि –

(1) संविधान का, राष्ट्र ध्वज का एवं राष्ट्र गान का आदर करूंगा।

(2) राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों का पालन करूंगा।

(3) देश की, भारत की एकता–अखंडता और प्रभुता की एवं वन, झील, नदी और वन्य जीवों की रक्षा करूंगा।

(4) राष्ट्र की सेवा करूंगा।

(5) स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध प्रथाओं का एवं धर्म, भाषा, प्रदेश या वर्ग के आधार पर भेदभाव का त्याग करूंगा।

(6) प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखूंगा।

(7) हिंसा से दूर रहूंगा।

(8) सार्वजनिक सम्पत्ति की संरक्षा करूंगा।

(9) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का, मानवतावाद का, सुधार की भावना का विकास करूंगा।

(10) भारत के सभी लोगों में समरसता और सम्मान एवं भातृत्व की भावना का निर्माण करूंगा।

(11) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का प्रयास करूंगा।

"अधिकारों के प्रति जागरूक रहो–कर्त्तव्यों के प्रति समर्पित रहो।"

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़।

भारतीय मानवाधिकार आयोग सभी बालक, विद्यार्थी व नागरिक बन्धुओं से अपेक्षा करता है कि अपनी फोटो व हस्ताक्षर के साथ संविधान में वर्णित मुख्य कर्त्तव्यों **"Article 51A"** का संकल्प लें और रोजाना दोहराऐ।